नाटक के बारे में

, कला और दर्शन—तीनों में एक क्रांति आयी है। सोचने, महसूस
ौर व्यक्त करने के पुराने अन्दाज़, पुराने ढंग, पुराने साँचे ठुकराकर
र फेंक दिए गये हैं। जो कभी निश्चित था, नियमबद्ध था, आज
वत और मुक्त है। पाबन्दियाँ—सोच की, विधा की, व्याकरण की
और अन्यायपूर्ण करार दे दी गई हैं। हर बात को नए ढंग से सोचने
रा करने की चेष्टा पहला सर्जनात्मक धर्म बन गया है।

ही कारण है कि चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नाटक—सब में
या रूप (अरूप भी कह सकते हैं) उभर रहा है। सृजन करने वाले
है कि वह पुराने चश्मे उतारे और अपनी नंगी आँख से नंगी वास्त-
ो को देखकर नये शब्दों और शैली में व्यक्त करे। नाटक के क्षेत्र में,
अर्थ है, मंच की कैद से आज़ाद होकर, समय और स्थान की सीमा
कर, दर्शकों को हिप्नोटाइज़ किए बिना, दर्शकों में घुसकर, दर्शकों में
बसकर, दर्शकों को पात्र बनाकर और पात्रों को दर्शक बनाकर, जीवन
उस वास्तविकता को पेश किया जाए, जिसे आज तक नाटककार
परा में कैद होने या उससे प्रभावित होने के कारण, प्रस्तुत नहीं कर
।

यह माँग निश्चय ही प्रगति की माँग है और नाटककार जितना मंच
आज़ादी की माँग करेंगे, उतना ही उनके नाटकों में
जाएगा। शिल्प के उतने ही नए प्रयोग वे कर पाएँगे
देने वाली अभिव्यक्ति, नाटक को कुतूहल के
ों को अपनी ओर खींच सकेगी।
. मैं इस कारण बड़े उत्तेजक नाटक लिखे

इस नाटक को खेलने के लिए लेखक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है। अनुमति के लिए लेखक को इस पते पर लिखा जा सकता है :

रेवतीशरण शर्मा
बाई-ई ८-४४, सरोजिनीनगर,
नई दिल्ली-२३

यह नाटक 'टूटे सपने' नाम से कला साधना मन्दिर, दिल्ली द्वारा रंगमंच पर सफलतापूर्वक प्रदर्शित हो चुका है। निम्न कलाकारों ने भूमिका अदा की :

□ □

दिनेश : विमल आहूजा
दया : श्रीमती साधना गुप्ता
दादी : श्रीमती उर्मिल राजपाल
चाची : कुमारी वीणा सेठी
रामदयाल : बालकृष्ण सूद
डाक्टर : श्री के० सी० जोशी
पिता : शान्तिस्वरूप कालरा
पंडित : श्री साहनी

□ □

निर्देशक : बी० डी० कारन्थ

पात्र

▫

दिनेश

दया

चाची

पिता

दादी

रामदर

पंडित

डॉक्टर

पहला अंक

[एक पुरानी हवेली का कमरा। बायीं तरफ एक मसहरीदार पलंग पिछली दीवार के साथ बिछा है। इसके सरहाने की तरफ किताबों का रैक है। दायीं तरफ ऊपरले कोने में अन्दर हवेली में जाने का रास्ता है। इसी तरफ, नीचे को जूते रखने का रैक है। बाहर से आने का दरवाजा बायीं तरफ है। फर्नीचर के नाम पर कमरे में एक कुर्सी है, दो गोल मूढ़े हैं, जिन पर गहरे उन्नाबी रंग का गिलाफ चढ़ा है।

रोशनी होती है तो दया, जो एक पतली-दुबली, साधारण कपड़े पहने, सीधे नक्श वाली लड़की है, बिस्तर की चादर ठीक करती नज़र आती है। फिर वह किताबों की अलमारी ठीक करती है। फिर पूरे कमरे पर नज़र डालती है। उसे रैक में जूते बे-तरतीब रखे नज़र आते हैं। वह रैक की तरफ जाती है और जूते ठीक करती है। फिर एक जूते के जोड़े को लेकर बड़े प्यार से अपने पल्लू से साफ करने लगती है। तभी बायीं तरफ के दरवाज़े से एक नवयुवक प्रवेश करता है। उसके हाथ में किताबें और प्लास्टिक की जिल्द वाली कॉपी है। वह दया को देखते ही किताबें और कॉपी बिस्तर पर फेंककर दया की तरफ बढ़ता है।]

दिनेश : दया ! यह क्या कर रही हो ?

दया : (समझकर भी न समझते हुए, चंचलतापूर्वक मुसकराते हुए) क्यों ?

दिनेश : तुम जूते साफ़ करोगी ?

दया : (साफ़ करते हुए) इसमें हर्ज है ?

दिनेश : है। (जूते उसके हाथ से लेकर नीचे रखता है)

तुम जूते साफ करने के लिए नहीं हो !

दया : (उठते हुए) क्यों ? तुम नहीं करते ?

दिनेश : मेरी बात और है। मैं अपने करता हूँ।

दया : ये मेरे नहीं हैं ?

दिनेश : (चौंककर दया की तरफ देखता है) नहीं !

दया : (दया का चेहरा उतर जाता है) ये किसी··· दूसरे के हैं ?

दिनेश : (एक क्षण के लिए निरुत्तर होकर) तुम बात को समझती क्यों नहीं हो, दया ! मैं तुमसे जूते साफ कराऊँगा ? (दूसरी तरफ जाते हुए) घर में कुछ कम लोग है ?

दया : तुम तो यूँ ही मेरी इतनी फिक्र करते हो। काम करने से कुछ थोड़े ही होता है।

दिनेश : (व्यंग्य से) हाँ ! काम करने से तो उल्टी तन्दुरुस्ती बनती है, हालत बेहतर होती है, चेहरे पर ताजगी आती है। आइना देखती हो कभी ?

दया : (पास आकर उसकी आँखों में देखते हुए) रोज देखती हूँ !

दिनेश : (हटते हुए) बस-बस, बात रिलाने की कोशिश न करो ! (फिर उसकी तरफ पलटते हुए) मैं पूछता हूँ तुम हमारे यहाँ इतना काम क्यों करती हो ? तुम किसी की दरम खरीद हो ?

दया : (मुसकराकर) दरम खरीद तो नहीं, पर तुम ही तो कहते हो, कुछ लोग बे-मोल बिक

जाते हैं।

दिनेश : यह मैंने अपने लिए कहा था।

दया : मेरे लिए नहीं कहा जा सकता ?

दिनेश : नहीं !

दया : क्यों ?

दिनेश : बताना होगा कि इस मोती का क्या मोल है ?

दया : (सहसा उदास हो, नीचे की तरफ जाते हुए) कंकरी को मोती मत कहो !

दिनेश : तुम कंकरी हो ? तो तुम जा सकती हो। (उसकी तरफ से मुह फेर लेता है)

दया : (उसकी ओर जाते हुए) नाराज़ हो गए ?

दिनेश : (खामोश रहता है)

दया : (बिलकुल पास जाकर) इतनी सी बात पर मन से उतार दोगे ?

दिनेश : (तड़पकर) तो तुम ऐसी बात क्यों कहती हो ?

हाथ रख कर) अच्छा, अब
!
पने को इतनी
ाजुओं से पकड़ते
? वक्त मे तुम लोगों
५८ अब भी तुम हमारा
हवेली. में रहते हो तो

दया : (उदास हो, बैठे हुए) पर दादी मां के और माताजी के इस घर पर कितने एहसान हैं !

दिनेश : (मुस्कराकर) क्या एहसान हैं ? घर की बची-खुची बासी दे देना ? पूरी-मिठाई बांट देना ? पुराने उतरे हुए कपड़े दे देना ? या जरूरत पड़ने पर रुपये दे देना, जो हमेशा वापस ले लिए जाते हैं ?

दया : लेकिन हमारी इन्हीं से कितनी मदद हो जाती है।

दिनेश : और तुमको और तुम्हारे पिताजी को नौकरों की तरह जो इस्तेमाल किया जाता है ? इस घर का नून-तेल-मसाला कौन लाता है ? इस घर के मिर्च-मसाले कौन पीसता है ?

दया : (उसकी कटुता दूर करने के लिए उठकर) तुम फिर वही बात ले बैठे। अपने लोगों के काम करने में बुराई थोड़े ही होती है। और अगर दादीजी मुझसे इतना काम न करातीं, तो मुझे कुछ आता ? लड़कियों को काम आना ही चाहिए।

दिनेश : (चिढ़कर) तो जाओ ! मुहल्ले-भर के लोगों के घरों की बेगार भुगताओ ! और काम आ जाएगा ! और काबिल बन जाओगी ! जाओ !

दया : (खोखी से मुसकराते और बैठते हुए) जाती हूं। थोड़ा सस्ता तो लूं !

दिनेश : क्या करोगी ! इतनी तन्दुरुस्त, इतनी पहलवान

रहने दो, जहाँ कि मैं हूँ।

दिनेश : (दृढ़ निश्चय से, बाजुओं से पकड़कर) तुम जहाँ की हो वहीं रहोगी, दया। तुम्हें यहाँ से कोई न हटा सकेगा।

चाची : (तभी अन्दर से आवाज़ आती है) दया!

[दया चौंककर और सहमकर दिनेश के हाथों से निकलना चाहती है, लेकिन दिनेश बड़े इत्मीनान से अपने हाथ उसकी बाहों से हटाता है। तब तक चाची अन्दर आ जाती है। दया मंच पर नीचे की तरफ चली जाती है।]

चाची : (दिनेश को देखकर मुसकराते हुए) तो साहब भी यहाँ हैं?

दिनेश : बस अभी आया था, चाची जी!

चाची : लेकिन मैंने कब कहा कि आप देर से आए हुए हैं! क्यों, दया! क्या मैंने ऐसा कहा? (दया मुँह छिपाकर अन्दर भाग जाती है।)

दिनेश : मेरी अच्छी चाची मुझे हमेशा अपने साए में रखोगी न?

चाची : (सहसा गंभीर और उदास होकर) तभी तक दिनेश, जब तक दादीजी को मालूम नहीं हो जाता। जिस दिन उनको मालूम हो गया···

दिनेश : (बात काटकर) उस दिन के लिए मैं तैयार हूँ।

चाची : (चौंककर) क्या?

दिनेश : अब मैं दया के बिना नहीं रह सकता, चाची जी!

दया : (हाथ छुड़ाकर नीचे की तरफ जाते हुए) तुम यकीन नहीं करोगे, दिनेश, मैं तुम्हारे लिए कुछ करती हूं, तुमसे कुछ कहती हूं, तुम्हारे पैरों में अपनी पलकें बिछाने की बात सोचती हूं तो मुझे लगता है…(जरा तेज़ी से) मैं धन्य हो गई हूं! (और तेजी से) मेरे भाग खुल गये है!

दिनेश : (ज़ोर से) गलत! यह तुम्हारे अन्दर अपने को छोटा समझने का भाव है, जो घर कर गया है।

दया : (बड़ी कोमलता से हौले-हौले गर्दन हिलाते हुए) मेरे अन्दर कोई ऐसा भाव घर नहीं कर सकता। (उसके बाजू से चेहरा लगाते हुए) जिसे प्यार मिल जाता है, उसे दुनिया का सब कुछ मिल जाता है।

दिनेश : (उसे सामने करके) और तुम्हें प्यार करके मैं भी यही तकलीफ दूंगा जो दुनिया दे रही है? दया, मैं तुम्हें अपने ख्वाबों के मखमल और प्यार के रेशम की आगोश में संजोकर रखूंगा! तुम्हारे अंग-अंग को मेरे चुम्बनों की गुलाबी पंखुड़ियों के नम होठ सहलाएंगे। मेरी उंगलियां तुम्हारे बालों को ऐसे सहलाएंगी, जैसे पत्तियों की पलकों को सुबह की ओस!

दया : (भावातुर होकर) दिनेश! दिनेश, मुझे ऐसे ख्वाब न दिखाओ जो मेरे नसीबों के ऊपर से बादलों की तरह भी न गुज़रेंगे। (उदास होकर) मुझे यहीं

चाची : वह पुरानी प्रथा ही को मानती हैं।

दिनेश : पर मैं उसे नहीं मानता।

चाची : लेकिन तुम्हारे न मानने से वह मानना नहीं छोड़ेंगी।

दिनेश : तो उनके मानने से मैं भी मानना शुरू नहीं करूंगा ! मैं पुराने ख़यालों को सोच की सीमा या अपने ख्याल की हद नहीं मानूंगा ! मैं बगावत करूंगा !

चाची : (उसे ग़ौर से देखकर और स्थिति की अनिवार्यता समझकर) तूने दया से पूछ लिया है ?

दिनेश : यकीन हो जाने पर पूछने की ज़रूरत रह जाती है ?

चाची : तो फिर दया के पिता से बात कर डाल और बिना देर किए।

दिनेश : क्यों ?

चाची : फिर शायद समय न रहे।

दिनेश : क्यों ?

चाची : दादी जी दया की शादी की बात चला रही हैं।

दिनेश : क्या ?

चाची : आज ही दादी जी रिश्ते की बात करके आयी हैं।

दिनेश : कहां ?

चाची : पूरी बात नहीं बताई, पर उन्होंने फ़ैसला कर लिया है। अब सिर्फ़ दया के पिता से ही करानी

मुझे अब दया को सबके सामने माँगना होगा।

चाची : (सहमकर) नहीं-नहीं, दिनेश, ऐसा न करना। गजब हो जायगा।

दिनेश : तो क्या मैंने दया का हाथ यूही पकड़ा है ? चाची जी, मैंने इश्क नहीं, अहद किया है।

चाची : (रुक-रुककर) तू दया को ···?

दिनेश : मैं दया को अपनी बनाऊंगा और आज के लिए नहीं, कल के लिए नहीं, जिन्दगी की उस घड़ी तक के लिए, जब तक किसी को अपनी बनाए रखना अपने बस में होता है।

चाची : (अशुभ बात पर टोकते हुए) कैसी बातें करता है ! तू लाख बरस जिये !

दिनेश : (बहुत गंभीर होकर) तो मुझे दया दिला दो।

चाची : कैसे ? तू जानता है दया रिश्ते में तेरी क्या लगती है ?

दिनेश . (थोड़ा झुंझलाकर) क्या लगती है ?

चाची : अनजान मत बन, दिनेश ! यह लगभग नामुमकन होगा।

दिनेश : नामुमकिन को मुमकिन बनाना होगा, चाची !

चाची : पर कैसे ? सब मान जाएँगे, पर दादीजी नहीं मानेंगी।

दिनेश : उन्हें क्या ऐतराज ?

चाची : उन्हें हर तरह का ऐतराज होगा।

दिनेश : लेकिन सिर्फ पुरानी प्रथा के हिसाब से ?

चाची : वह पुरानी प्रथा ही को मानती हैं।

दिनेश : पर मैं उसे नहीं मानता।

चाची : लेकिन तुम्हारे न मानने से वह मानना नहीं छोड़ेंगी।

दिनेश : तो उनके मानने से मैं भी मानना शुरू नहीं करूंगा! मैं पुराने खयालों को सोच की सीमा या अपने ख्याल की हद नहीं मानूंगा! मैं बगावत करूंगा!

चाची : (उसे गौर से देखकर और स्थिति की अनिवार्यता समझकर) तूने दया से पूछ लिया है?

दिनेश : यकीन हो जाने पर पूछने की जरूरत रह जाती है?

चाची : तो फिर दया के पिता से बात कर डाल और बिना देर किए।

दिनेश : क्यों?

चाची : फिर शायद समय न रहे।

दिनेश : क्यों?

चाची : दादी जी दया की शादी की बात चला रही हैं।

दिनेश : क्या?

चाची : आज ही दादी जी रिश्ते की बात करके आयी हैं।

दिनेश : कहां?

चाची : पूरी बात नहीं बताई, पर उन्होंने फंसवा कर लिया है। अब सिर्फ दया के पिता से हां करानी

है।

दिनेश : नहीं-नही, यह नही होगा ! मैं उनसे आज ही बात करूँगा। मैं पिता जी से भी बात करूँगा।

पिता : (प्रवेश करके विनोदपूर्वक) क्या ? क्या बात करनी है मुझ से ?

दिनेश : (चाची की तरफ देखता है। चाची नज़र मिलते ही अन्दर चल देती है। दिनेश पिता की तरफ बढ़ता है। कुर्सी बढ़ाते हुए) पिता जी, मुझे आपसे कुछ अर्ज़ करना है।

पिता : (विनोदपूर्वक) और वह इतना जरूरी है कि मुझे साँस लेने भी न दिया जाए ? (कुर्सी पर बैठते हुए) तो कहो, हमारा बेटा आज कौनसी लकीर से हटना चाहता है!

दिनेश : पिता जी···पिता जी, मै शादी करना चाहता हूँ।

पिता : (बड़े जोर से हँसकर) शुक्र है कि हमारा बेटा एक तो पुराने ढग का काम करना चाह रहा है।

दिनेश : (तेजी से) मैं दया से शादी करना चाहता हूँ।

पिता : (शुरू में न समझकर) क्या? दया से?···(चौंककर) अपनी दया से ? (हाथ से घर की तरफ इशारा करके)

दिनेश : जी हाँ!

पिता : तुम क्या कह रहे हो, बेटे! दया तो तुम्हारी···

दिनेश : दया मुझे पसन्द है !

पिता : लेकिन दया···

दिनेश : (बिना उनकी तरफ देखे) जिसे देखा है, परखा है, पूरी तरह जाना है—वही शादी के लिए सबसे मुनासिब है।

पिता : लेकिन यह मुनासिब का नहीं, रिश्ते का सवाल है।

दिनेश : लेकिन दया के पिता को हमने रिश्तेदार नहीं समझा है। जो दूर का रिश्ता था उसे अमीरी-ग़रीबी के फ़र्क ने खत्म कर दिया।

पिता : लेकिन इसका फैसला मैं और तुम नहीं कर सकते !

दिनेश : तो कौन करेगा ?

पिता : तुम्हारी दाद ा

दिनेश : आप दादी जी से पूछेंगे ?

पिता : इस घर में उनसे पूछे बिना आज तक कुछ नहीं हुआ है।

दिनेश : और होगा भी नहीं ?

पिता : तुम जानते हो वह मेरी सगी माँ नहीं हैं ?

[एक क्षण के लिए दिनेश की गर्दन झुक जाती है]

...भी मालूम है कि जब उनकी शादी हुई ...रे चचा छः और चार साल ... और तुम्हारे चचा को ...ने कहा था—मेरे दो

बच्चे हैं। मुझे और बच्चे नहीं चाहिए। आज भी उनके ये दो ही बच्चे हैं।

दिनेश : लेकिन इससे उनका फैसला हर बात में आखिरी नहीं हो जाता।

पिता : मेरे लिए हो गया है। मैंने सिर्फ एक बार उनके कहे को टाला है—और वह जब तुम्हारी माँ के गुजर जाने के बाद उन्होंने मुझसे दूसरी शादी करने को कहा था। मैं दूसरी बार ऐसा नहीं करूँगा!

दिनेश : और वह न मानीं···

पिता : तो मेरे लिए बात खत्म हो जाएगी।

दिनेश : तब आप उनसे न पूछियेगा।

पिता : खिलाफ नहीं जा सकता, पर बात तो कर सकता हूँ। (आवाज़ देता है) अम्मा!

दादी : (अन्दर से) क्या है रे?

पिता : अम्मा, ज़रा यहाँ आओ!

दादी : (अन्दर से) अभी?

पिता : हाँ, अम्मा!

[दादी कमरे में आती है, दिनेश खड़ा हो जाता है।]

दादी : (दिनेश के पिता से) तू कब आया? (पिता उन्हें कुर्सी पर बिठाते हैं। बैठते ही दादी की नज़र दिनेश पर पड़ती है।) यह कैसे ख— है?

पिता : अम्मा! यह तुमसे कुछ कहना चाहता है।

दादी : क्या ?

पिता : दिनेश ! अपनी दादी जी से कह दो !

[दिनेश चुप रहता है।]

दादी : क्या बात है ?

पिता : कहते क्यों नहीं ! अगर करेंगी तो यह करेंगी !

दादी : क्या करना है ?

पिता : बोलते क्यों नहीं ?

दिनेश : (तिरछा होकर पर सिर तानकर) आप बता दीजिए !

दादी : (सख्ती से) क्या बात है ?

पिता : यह दया से शादी करना चाहता है !

दादी : (जैसे किसी ने डंक मार दिया हो, कुर्सी से उठ खड़ी होती है) क्या ? दिमाग़ तो खराब नही हो गया? चील की बीट तो नही खा ली है बाप-बेटों ने ?

पिता : (गर्दन झुकाकर) कभी-कभी बेटे के खोदे का भरना पड़ जाता है, अम्मा ?

दादी : (भड़ककर) तू भरेगा ? (उठ खड़ी होती है।)

पिता : लेकिन आपके बिना···

दादी : (एक कदम पीछे हटकर) क्या ? पाप के इस पोतड़े में तू मुझे भी लपेटना चाहता है ?

पिता : पाप के पोतड़े में ?

दादी : अरे, अपने बेटे की शादी की बात अपनी ही बेटी से···

दादी : मैं अपने धर्म की बात करती हूँ !

दिनेश : मैं भी उसी की बात करता हूँ ! अगर शास्त्र नस्ल अच्छा बनाने की खातिर ही ऐसा कहते हैं तो फिर वे अपनी ही जात और अपने ही धर्म में शादी करने को क्यों कहते हैं ? क्यों नहीं कहते दूसरी जातों, दूसरे धर्मों और दूसरी नस्लों मे शादी करने को ? ताकि खून ज्यादा से ज्यादा बच सके ? नस्ल अच्छी से अच्छी बन सके ?

दादी : मुझे बनानी है तो तू बना ! दया छोड़ किसी मेहरी-कहारी से शादी कर ले !

दिनेश : कर लेता (अपने पर संयम करते हुए) अगर मुहब्बत हो जाती। लेकिन मेरा फैसला हो चुका है। मैं शादी करूँगा तो दया से करूँगा, वरना नहीं करूँगा।

दादी : तो न कर ! तेरे क्वारा रहने से यह दुनिया खाली न हो जाएगी।

पिता : अम्मा···

दादी : (उसकी तरफ़ बढ़ते हुए) ओह ! बेटे के शादी न करने की बात सुनते ही हिया काँप उठा। निर्बंस रह जाने की बात सुनते ही मन डोल उठा! तो कर ले शादी ! ब्याह दे बेटे को अपनी ही बेटी से ! (जाने लगती है।)

पिता : अम्मा ! (पकड़ने की कोशिश करता है।)

दादी : (झटके से हाथ हटाकर) मुझे ... मैं अब

इस घर का पानी भी नहीं पीऊँगी ! जहाँ बद-माशी पलेगी, मैं घड़ीभर न रहूँगी ।

[दादी चली जाती है। पिता की गर्दन झुक जाती है। कुछ देर तक दिनेश पिता को तरफ देखता है।]

दिनेश : आपका फैसला भी यही है ?

पिता : मैंने पहले ही कह दिया था। कोशिश कर सकता हूँ।

दिनेश : खिलाफ नहीं जा सकते ?

पिता : नहीं।

दिनेश : (संकल्प करके) तो मुझे जाना होगा। दया के लिए मैं घर छोड़ दूंगा।

पिता : (गिरे स्वर मे) छोड़ सकते हो, बेटे ! (खड़े होकर) मैं कोशिश ही कर सकता था, मैंने कर ली।

[पिता हौले-हौले अन्दर चले जाते हैं। उनके जाते ही दिनेश तेजी से पलटता है और अपने कपड़े समेटकर सूटकेस में डालने लगता है। तभी चाची अन्दर आती है और उसके हाथ से कपड़े छीनती है।]

चाची : यह क्या पागलपन कर रहा है ?

दिनेश : चाची, मैं अब इस घर में नहीं रहूँगा।

चाची : क्यों नहीं रहेगा ? यह घर तेरा है।

दिनेश : मेरा नहीं है। जहाँ मेरी मुहब्बत के लिए जगह नहीं है, वह घर मेरा नहीं हो सकता।

चाची : तो अपना हक छोड़कर भाग रहा है ?

दिनेश : मैं भाग नहीं रहा, चाची, आज़ाद हो रहा हूँ। सारे बन्धन तोड़कर दया को हासिल करूँगा।

चाची : यहां रहकर नहीं कर सकता ?

दिनेश : नहीं। मैं पिता जी के लिए मुश्किल नहीं बनूंगा।

चाची : उनके लिए क्या मुश्किल बनोगे ?

दिनेश : आपने सुना नहीं—जब तक मैं इरादा नहीं बदलूंगा, दादी जी घर का पानी भी न पियेंगी।

चाची : (आवेश में) न पियें।

दिनेश : और जब तक वे नहीं पियेंगी··· (गहरा सांस लेकर) पिता जी नहीं पियेंगे। (चाची की गर्दन झुक जाती है।) इसलिए मुझे जाना होगा।

चाची : नहीं-नहीं ! यह नहीं होगा। हमारे होते हुए तुम इस घर से नहीं जा सकते। तुम अपने चाचा जी को तार दो।

दिनेश : कोई फायदा नहीं, चाचीजी ! दादी जी के आगे कोई न बोल सकेगा।

चाची : (निरुत्तर होकर) लेकिन यह कैसे हो सकता है कि घर का बेटा···

दिनेश : बेटा आसमान चाहेगा तो उसे ज़मीन छोड़नी ही होगी, चाची ! तुम चिन्ता न करो। सिर्फ दया को मेरा एक सन्देश दे देना।

चाची : (विह्वल होकर) नहीं-नहीं ! तू इस तरह नहीं जा सकता। (दरवाज़े की ओर जाते हुए) मैं

दया को बुलाती हूँ।

दिनेश : (घबराकर) चाची जी ! दया को यहाँ न बुलाना। दादी जी ने देख लिया तो गजब हो जाएगा !

चाची (रुककर) इससे बड़ा गजब और क्या होगा ? (जाते हुए) तुझे मेरी क़सम जो जाए ! मैं दया को भेजती हूँ।

[चाची चली जाती हैं। दिनेश के हाथ ढीले पड जाते हैं मगर वह कपड़े उठाकर सूटकेस में रखता रहता है। सूटकेस का सटका बन्द करता है कि दया दरवाज़े में दिखाई देती है।]

दिनेश : दया! (उसकी ओर बढ़ते हुए) मेरी दया !

दया : (दया आगे आती है) यह आपने क्या किया ? क्या कर दिया !

दिनेश (बहुत ठहरे स्वर में) जो मुझे करना चाहिए था।

दया : (विचलित) नहीं-नहीं ! आपको ऐसा करना नहीं चाहिए था। मैं इस लायक नहीं हूँ।

दिनेश : (स्वर धीमे से तेज होता जाता है।) तुम इस लायक हो कि तुमसे इश्क किया जाए। तुम इस लायक हो कि तुमसे घर का काम कराया जाए। पर तुम इस काबिल नहीं कि (तीव्र स्वर) तुमसे शादी की जाए ?

दया : (भय और निराशा से बैठते हुए) हाँ ! मैं इस

क़ाबिल नहीं हूँ।

दिनेश : (तेजी से आकर उसे उठाते हुए) तुम्हारे आत्म-सम्मान को हुआ क्या है? तुम क्यों अपने को दुनिया के जब्रो-सितम का शिकार बनाना चाहती हो?

दया : मैं यह घर उजाड़ना नहीं चाहती।

दिनेश : (क्रोध-मिश्रित आवेश) या बसाना नहीं चाहती?

दया : (चौंककर देखती है। फिर उसकी कमीज़ का सामना पकड़कर) ऐसे न सोचो! तुम्हें मालूम है दादी जी अड़ गई हैं।

दिनेश : और मैं?

दया : पर ज़रा सोचो तो मुझमें ऐसा क्या है…?

दिनेश : जिसकी ख़ातिर कोई यह फ़र्श, यह छत, दीवारें छोड़ दे? (बाँहों से पकड़कर) लोग कहते हैं ज़िन्दगी नहीं छोड़ी जाती… (छोड़कर और पकड़कर) मैं यह भी छोड़ दूँगा!

दादी : नागिन ! मेरे ही घर में, मेरे ही अनाज पर पल-कर, मेरे ही डंक मारने चली है ! (उसकी बाँह पकड़कर) तू ज़रा अन्दर चल !

[उसे घसीटकर अन्दर ले जाना चाहती है कि दिनेश तेज़ी से बढ़कर रास्ता रोक लेता है।]

दिनेश : दादी जी ! इसे छोड़ दीजिए।

दादी : क्या ?

दिनेश : दया को छोड़ दीजिए।

दादी : तेरे बदमाशी करने के लिए ?

दिनेश : जिस लफ़्ज़ के माने आपको मालूम नहीं, उसे इस्तेमाल न कीजिए।

दादी : मुझे सब मालूम है। चल अन्दर (खींचती है)।

दिनेश : मैं कहता हूँ दया को छोड़ दीजिए।

दादी : एक तरफ़ हट जा !

दिनेश : नहीं ! इसे मैंने बुलाया है। मुझे कहिए।

दादी : मैं दोनों को भुगतूँगी। (दया को खींचती है।)

दिनेश : (दया का हाथ पकड़कर) नहीं !

दादी : इसका हाथ छोड़ दे !

दिनेश : नहीं।

दादी : नहीं छोड़ेगा ?

दिनेश : नहीं।

दया : (रोकर) मेरा हाथ छोड़ दीजिए।

दिनेश : तुम खामोश रहो।

दादी : (जोश में पागल होकर) क्या --(गुस्से में

[illegible]

पिता . ([illegible]) अम्मा !

दादी : हट जाओ ! (आगे निकल जाती है।)

पिता : (फिर आगे आकर) अम्मा !

दादी : नहीं ! अगर मैं अपने बाप की बेटी हूँगी

पिता : (घुटनों पर गिरकर रोते हुए) अम्मा ! अम्मा ! आगे कुछ न कहना, वरना मैं जीते जी मर जाऊँगा। (हाथ पकड़ रहा है पर गर्दन झुकाकर फिर दादी की टाँगों से लगा लेता है।)

रमा : (ज़हर का घूँट पीने की क्षमता आ जाती है) दिनेश, अगर तुमने मुझे चाहा है, चाहते हो,

दिनेश : (टोकते हुए) दया !

दया : (रोते हुए) कि आज के बाद तुम मेरी सूरत नहीं देखोगे।

दिनेश : (ज़ोर से) दया !

दया : (रोते हुए) दया मर गई···(दादी की ओर जाते हुए) दादी जी, मेरा जो चाहो कर लो ! (घुटनों के बल बैठकर गर्दन झुका देती है और आँखें मूंद लेती है।)

दिनेश : (चीखकर, अन्तिम बार जैसे सचेत करता है, जगाता है) दया !

दया : दया अब नहीं है !

दिनेश : (ज़हर पीकर, मगर तनकर) तो ठीक है ! (सूटकेस उठाकर जाते हुए दया के पास रुककर) अगर दया नहीं है तो दिनेश भी नहीं है ! (और तेज़ी से बाहर चला जाता है)।

दूसरा अंक

[illegible]

रामदयाल (पिछले स्वर में) अरी चार बताशे भी लिये कि नहीं ?

दया (अन्दर से बाहर आकर) जी, लिए गए। (गिलास देती है, भाप सी निकलती है।)

रामदयाल (उसके शब्द दोहराकर) जी लिए गए ! मानो कोई काम जल्दी नहीं होता। (दया को अन्दर जाते देखकर) यह मेरा कुरता दे जा और अगर मक्खी मंगानी है तो पैसा भी ले जा।

[दया अन्दर जाती है। वह ठंडाई पीता है। पीकर उठता है कि दया अन्दर से आकर उसे कुरता और दो पैसे देती है।]

रामदयाल : (दूसरा पैसा देखकर) यह दूसरा पैसा किस लिए है ?

दया : (गरदन झुकाकर) आटा नहीं है।

रामदयाल : (भड़ककर) क्या गेहूँ खतम हो गए

दया : पिसे नहीं हैं।

रामदयाल : क्यों ? चक्की फिर खराब कर दी ?

दया : मुझसे पीसा नहीं गया।

रामदयाल : (चिढ़कर) तुझसे होता क्या है ! (कुरता पहनते हुए) न काम की, न धाम की, बस कभी कमज़ोरी, कभी बुखार (दया खाँसती है) और एक यह खाँसी है कि साली हर वक्त ठनकती रहती है ! (बटन लगाते हुए) वैद्य जी की पुड़िया खा रही है ?

दया : खा रही हूँ !

रामदयाल : और कोई फ़ायदा नहीं ?

दया : अभी तो नहीं।

रामदयाल : और होगा भी नहीं। तुझे डाक्टरों की दवा जो चाहिए।

दया : (पहली बार ज़रा तमककर) मैंने कब कहा ?

रामदयाल : तू तो लाख बार कहे, अगर मैं मानूँ। चली ही गई थी अस्पताल।

दया : मैं कहाँ जाती थी। पड़ोस के डाक्टर की बीवी ज़बरदस्ती ले गई थी।

रामदयाल : वह क्यों न ले जाएगी। साले डाक्टरों का व्यापार जो चलता है।

दया : (सफाई में) वह मुझे सरकारी अस्पताल ले गई थी।

रामदयाल : जहाँ वे तेरे मतलब की बात करते हैं कि काम

[illegible]

चाची : दया !

दया : ([illegible]) चाची जी ! ([illegible] कि चाची रो रही है।)

चाची : [illegible] ! ([illegible] बैठते हुए) यह कैसे पता चला ?

दया : (दूसरी तरफ आँखें करके) क्या ?

चाची : कि भगवान [illegible] ने [illegible] बनाई है !

दया : (बैठते हुए) भगवान करे उनकी जिह्वा पर सरस्वती हो !

चाची : कैसी भला बोलती है।

दया : मेरे लिए तो यह आशीर्वाद है, चाची जी !

चाची : (उठकर) मैं जाऊँ तो ?

दया : (रोककर) आप भी रूठ जाएँगी ?

चाची : फिर ऐसी बात क्यों कहती है ? क्यों नहीं बताती डाक्टर ने क्या कहा है ?

दया : यही कि फेफड़ों की दिक्क़त है।

चाची : हाय ! (सिल-बट्टे की ओर इशारा करके) और तू यह सब कुछ कर रही है ! तू चल और आराम कर।

दया : (उन्हें बिठाते हुए) बस, अब आराम ही आराम करूँगी।

चाची : दया ! तुझे हुआ क्या है ? तूने तब भी… !

दया : (तड़पकर) मौत की बात न करो, चाची जी !

चाची नहीं करती। पर दया, तुझे अपना ख़याल रखना होगा, इलाज कराना होगा।

दया (गहरा सांस छोड़कर) करा रही हूँ।

चाची : किसका ?

दया : (चाची की तरफ़ देखकर) इतनी चिन्ता क्यों करती हो ? तुम्हारी दया इतनी जल्दी मरने वाली नहीं है।

चाची : (मुँह पर हाथ रखकर) तू नहीं मानेगी।

दया : अच्छा, अब यह भी नहीं कहूँगी ! वहाँ तो सब ठीक है ? दादी जी…

चाची : मेरे सामने उसका नाम न लो।

दया : उनसे नाराज़ क्या होना।

चाची : तो किससे होना ? यह किया-धरा किसका है ?

दया : मेरा ! (उठकर दाहिनी तरफ जाते हुए) डाल पर आकर बैठी थी, समय पर नहीं उड़ी तो पिंजरे गई, पर इसमें चाचे का क्या दोष ?

चाची : पर हुआ तो सब उनकी वजह से। न वह अड़ती...

दया : क्यों न अड़ती ? मैं रिश्ते की थी। इस घर के लायक न थी।

चाची : इस घर के लायक थी ?

दया : (हल्के कटु हास्य से) और क्या—बाप मुनीम, आदमी मुनीम ! इससे ज्यादा क्या मिलता ?

चाची : ठीक है। जब तूने दिनेश की नहीं सुनी, तो मेरी क्या सुनेगी ? मरने की ठान ही ली है तो मर जा !

दया : जी भी जाऊँ तो क्या फर्क पड़ता है ?

चाची : मैं तुझे आज तक नहीं समझ सकी, दया ! जब तू अपनी जान यूँ गला सकती है, मौत की भट्ठी में यूँ ताप सह सकती है, तो तूने जीने की हिम्मत क्यों नहीं की ?

दया : (बहुत गहरा साँस लेकर) चाची ! आज मर जाऊँगी तो कोई यह तो न कहेगा—हमारा ही नमक खाकर हमें दगा दे गई। अपना घर बसाने की खातिर हमारा घर बिगाड़ गई।

चाची : वह घर बसा हुआ है ? उस दिन का गया दिनेश आज तक नहीं लौटा है। कितना-कितना समझा लिया पर उसने उस घर में क़दम नहीं रखा है।

दया : मुझे मालूम है।

चाची : कोई कह लेता तो क्या कर लेता ? दया, हिम्मत कर लेती तो कुछ न होता।

दया : टूटा हुआ काच कुरेदने से हाथ ही कटता है, चाची जी ! कोई और बात करो।

चाची : और क्या बात करूँ, दया ?

दया : (बात बदलने के लिए) इतनी दूर चलकर आयी हैं, प्यास लगी होगी !

चाची : (उठकर, बहुत खिन्न मन से) नहीं, अब मैं जाऊँगी।

दया : क्यों, क्या हुआ ?

चाची : कुछ नहीं ! मुझसे बैठा न जाएगा।

दया : चाची जी !

चाची : (बहुत उदास और भावातुर होकर) मुझे जाने दे, दया ! फिर आ जाऊँगी।

दया : लेकिन···

चाची : तुझे मेरी कसम, दया···अब जाने दे।

[दया उन्हें जाने देती है। फिर धीरे-धीरे गिल-बहटे की तरफ जाती है कि इतने में रामदयाल अन्दर आता है।]

रामदयाल : (बाहर की तरफ़ देखकर ओर से) अन्दर आ जाओ, पंडित जी !

[दया आँचल ठीक करके अन्दर चली जाती है।]

पंडित : (रामदयाल चारपाई खोलकर आगे करता है। पंडित जी 'हरे-हरे' करते हुए बैठते हैं) कुशल-

मतलब क्या है यजमान ?

रामदयाल : यही क्या कुछ [illegible] है ! कहीं तुम यह [illegible] कि तुम पर [illegible] टके [illegible] निकाले हो ?

पंडित : देखा ?

रामदयाल : हाँ।

पंडित : क्या क्या हुआ ?

रामदयाल : पत्नी का टका निकाला था, वह मर गयी और अब यह भी (अन्दर की ओर इशारा करके) खाट पर पड़ी है।

पंडित : इन्हें क्या हुआ ?

रामदयाल : एक हो तो बताऊँ। लुगाई क्या, रोग की पुड़िया लाया हूँ।

पंडित : कुछ काया-कष्ट है ?

रामदयाल : (नार पर नटका तौलिया उतारता है) उसको क्या, मुझे है। मुझे तो दीखे है कि मैं सात लुगाइयों को कन्धा देने को रह गया हूँ (मुँह पोंछता है।)

पंडित : हरे-हरे ! कैसे अशुभ वचन मुँह से निकाल रहे हो ! भगवान सब भला करेंगे ।

रामदयाल : मेरा तो नहीं, तुम्हारा जरूर भला करेंगे। फेरे फिराई के तुम्हारे टके फिर खरे हो जाएँगे !

पंडित : यह क्या कह रहे हो, यजमान ?

रामदयाल : जो दीखे है। बिना लुगाई के रहा नहीं जाएगा। तीसरी शादी कराऊँगा तो तुम्हारी दक्षिणा फिर खरी ।

पंडित : नहीं-नहीं !, ऐसा कैसे हो सकता है ? मैंने तो पत्री चल की तरह ठोक कर मिलाई थी। तनिक दोनों पत्री लाना।

[रामदयाल पत्री लाने को जाता है। पंडित अपना पत्रा खोलता है। रामदयाल टेवा लाकर देता है। पंडित दोनों को देखता है। फिर विचारता है।]

रामदयाल : क्यों क्या लिखा है ?

पंडित : (गंभीर होकर गरदन हिलाते हुए) ग्रह है ! काया-कष्ट है !

रामदयाल : पर आप तो कहते थे…

पंडित : यजमान ग्रह बदलते रहते हैं। मंगल इनके आयु-ग्रह में आन खड़ा हुआ। रोग लम्बा चलेगा।

रामदयाल : मारकेश तो नहीं है ?

पंडित : भय है !

रामदयाल : (भड़ककर) तो तुमने पत्री साफ मिलाई ? हर बार मेरे गले मुर्दघाट का माल डाला।

पंडित : यजमान भागों के भोग हैं। उस समय मारकेश नहीं था। तुमसे ब्याह होते ही ग्रह बदल गए। पर ग्रह-निवारण हो सकता है।

रामदयाल . उसके लिए जाप करोगे ?

पंडित : हाँ ! इक्कीस दिन के…

रामदयाल : (उठकर) ना ना महाराज, मेरे बस का ना है, दो-दो बार लुटना। एक अब दूँ, एक जब फिर शादी करूँ ! (उठकर) मुझे तो अभी सब्जी

[illegible]

दया : तुम? तुम यहाँ ।

दिनेश : हाँ, दया !

दया : पर कैसे तुम्हें ...

दिनेश : कसम दिलाई थी - मैंने खाई भी थी । पर आप आगे को रोक न सका ।

दया : लेकिन क्यों ?

दिनेश : क्यों ? तुम बीमार हो !

दया : नहीं ! मुझे कुछ नहीं हुआ है। बस खाँसी है, हल्का बुखार है। कमजोरी है सो चली जाएगी। (घबराकर दरवाजे की ओर देखते हुए) अब आप चले जाइए ! (दिनेश बड़ी उदास, मजबूर निगाहों ...

झुकाकर) आप चले जाइए ! अगर किसी ने देख लिया…

दिनेश : जानता हूँ। इसीलिए इतने दिन बीत जाने पर भी एक बार इधर नहीं आया। अपने सीने में मुलाकात की सुलगती हुई ख्वाहिश को गुनाह के खयाल की तरह दबाता रहा। पर आज जब आ ही गया हूँ…

दया : नहीं-नहीं…आप चले जाइए ! चले जाइए !

दिनेश : चला जाऊँगा…लेकिन एक पल के लिए तो उस चेहरे को निहारने दो, जिससे कभी मैं अपनी दुनिया बसाने चला था।

दया : (मुँह फेरकर और भावनाओं को पूरी तरह दबाकर) वह चेहरा मर गया है ! मिट गया है !

दिनेश : वह मरा नहीं है ! वह मेरी आँखों के आकाश में बस गया है। हर शाम वह मेरी यादों के झुरमुटों के पीछे से चाँद की तरह निकलता है और रातभर मेरे ख्वाबों की खिड़की में अटका मुझे उन्हीं निगाहों से तकता रहता है। (दया पलटकर उसकी तरफ देखती है।) मैंने सारा चाहा है, मैं सारा चाहूँगा पर वह सब कुछ कभी न भुला सकूँगा।

दया : लेकिन अब कुछ दिनों की बात है—फिर सब कुछ मिट जाएगा—राख हो जाएगा।

दिनेश : क्योंकि तुम्हें दिक़ हो गई है ?

दया : हाँ ! दिक ने कब किसको बख्शा है।

दिनेश : गलत ! अब दिक ऐसी बीमारी नही है। वह नब्बे फीसदी सूरतों में ठीक हो जाती है।

दया : पर मेरे सिलसिले मे ऐसा नही होगा।

दिनेश : क्योंकि तुम इलाज नही कराओगी ? आराम नही करोगी ?

दया : सब करके देख लिया।

दिनेश : (सिल की तरफ इशारा करके) यह आराम है ? वैद्य की पुड़िया इलाज है ? दिक का इलाज सिर्फ डाक्टरों के पास है। तुम डाक्टरों के पास जाओ।

दया : जाऊँगी। (उठती है)

दिनेश : (सामने पहुँचकर) तुम नहीं जाओगी। मुझे मालूम है तुम जाओगी नही, दूसरा जिलाएगा नहीं।

दया : (जाते हुए) अच्छा है ! तन की कारा से मुक्ति मिल जाएगी।

दिनेश : दया !

[दया दिनेश की तरफ देखती है।]

दिनेश : (उसके पास जाते हुए) तुम दुखी हो ?

दया : तुम सुखी हो ?

दिनेश : ( ) दया !

दया : [illegible] हो ?—[illegible]रा है जो

मैंने तुमसे नहीं कहा ?

दिनेश : ऐसी बात नहीं है, दया ! पर मैंने सोचा शायद···

दया : मैं सुखी हो जाऊँ ? वह सब कुछ भूल जाऊँ जिसने मुझे दिन की घड़ियों में सपने और रात के बे-कल पलों में तारे गिनवाए ? एक पल में अमृत और एक छिन में ज़हर के घूंट भरवाए ? क्या तुम मुझे ऐसी समझते हो ?

दिनेश : नहीं-नहीं, दया, मैं ऐसा नहीं समझता। मैं समझता हूँ वह क्या मजबूरी थी जिसने तुम्हें यूँ मजबूर किया ?

दया : पर काश मैं यूँ मजबूर न होती ! गला घोंट लेती, ज़हर खा लेती !

दिनेश : तब क्या होता ?

दया : इस यातना से बच जाती।

दिनेश : और मैं ? (दया हैरानी से देखती है।) दया, आज तुम मेरे पास नहीं हो। मेरी नज़रों से नींद की तरह दूर हो। लेकिन एक सहारा तो है कि तुम जहाँ भी हो मेरे खयाल से गाफ़िल नहीं हो।

दया : दिनेश !

दिनेश : सच, दया ! जानता हूँ तुम मेरी नहीं हो सकती। मैं तुम्हें नहीं पा सकता, पर जाने क्यों तमन्ना है कि जब ज़िन्दगी से जी बहुत घबरा जाए तो दिनों बाद न सही, बरसों बाद ही तुम्हारी एक झलक मिल जाए। दिल का टूटा हुआ काँच तुम्हारी

दमक से हीरे की तरह जगमगा जाए।

दया : ऐसे न कहो दिनेश, ऐसे न कहो। प्यार करके मैंने नहीं तुमने एहसान किया है। मेरी जिन्दगी में कुछ नहीं था, बस एक तुम थे। एक तुम्हारी आँख थी जिसने मेरे लिए आँसू का मोती उगला था। मैंने उस आँसू को मन की अंगूठी में जड़-कर अपना शृंगार करना चाहा। पर वह भी किसी को न भाया।

दिनेश : पर यह मोती आज भी तुम्हारा है। पलकों की दहलीज़ पर खड़ा आज भी तुम्हारे सपने देखता है।

दया : जानती हूं। मैं जानती हूं।

दिनेश : तो क्या मेरी इल्तजा कबूल करोगी? मेरी एक आखिरी ख्वाहिश परवान चढ़ाओगी? (जेब से कुछ नोट निकालकर) अपने इलाज के लिए ले लो।

दया : (तड़पकर) नहीं, दिनेश, नहीं। मैं यह रुपये नहीं लूंगी। नहीं लूँगी।

दिनेश : दया!

दया : मैं कभी नहीं लूंगी।

दिनेश : मुझे पराया समझती हो?

दया : पराये न होते, मेरे होते तो मैं आज इस हाल में यहां [illegible] ? (चे[illegible]ओं में छिपाकर रो

दिनेश : दया ! तुम यूँ न रोओ। मैं तुम्हें कुछ नहीं दूँगा। पर मुझे एक वादा तो दो। वचन दो कि तुम अपने को यूँ ही खत्म नही करोगी। जीने की, इलाज कराने की कोशिश करोगी।

दया : (आँसू पीकर) करूंगी—जितना जहर बचा है उसके घूंट भी भरूंगी। पर दिनेश, एक जहर का घूंट तुम्हें भी पीना होगा—मेरे सामने न आना।

दिनेश : दया !

दया : हाँ, दिनेश, तुम्हें देखकर मुझसे कुछ और न देखा जाएगा।

[यकायक बाहर से दाद [illegible] की आवाज आती है।]

दादी : दया !

दया : (काँपकर) दादी जी ! कहीं छिप जाइये।

[दया तेजी से अन्दर चली जाती है। दिनेश दरवाजे की तरफ दीवार से चिपक जाता है। दादी आंधी की तरह आती है और बिना इधर-उधर देखे कोठरी की [illegible] है। दिनेश झट से बाहर निकल जाता है।]

[illegible] मूढ़ा लिए आगे बढ़ती [illegible]) आइये, दादी जी ! (पैर [illegible] है कि खांसी आती है)।

[illegible] है ?

[illegible] जी।

[illegible] [illegible]?

[illegible] जी।

[illegible] [illegible]?

[illegible]

[illegible] [illegible]?

[illegible] जी।

[illegible] [illegible]?

[illegible] [illegible]?

[illegible] [illegible]?

[illegible] किसी की नहीं।

[illegible] आदमी बुरा है?

[illegible] जी नहीं।

[illegible] काम बुरा है?

[illegible] जी, नहीं।

[illegible] फिर तुम्हें फिक्र कैसे हुई? कैसे तुमने पहले मना कर दी [illegible]?

[[illegible] रही है।]

और त्रिया-चिलत्तर के पीछे कौन है ?

दया : (काँपकर) दादी जी !

दादी : सँपोलन ! तू अभी तक उस दिनेश को…

दया : (काँपकर उनकी तरफ़ बढ़ते हुए) दादी जी ! मैं आपके आगे हाथ जोड़ती हूँ उनका ज़िक्र कीजिये।

दादी : और तू उसका सोग करके अपने को [illegible] मेरी नाक कटाए ?

दया : मैं ?

दादी : और क्या ? दुनिया तो मुझी पे [illegible] मैंने तुझे ऐसे घर धकेल दिया [illegible] हो गई।

दया : (कमज़ोर आवाज़ में) पर [illegible] कुछ नहीं कहा।

दादी : पर [illegible] ओ[illegible] बच्ची ही ने यह [illegible]

[illegible] र कुछ मि[illegible]

[illegible] गे समा[illegible]

मत आ[illegible]

बैठिए।

दादी : (बैठकर) रामदयाल तेरा इलाज करा रहा है ?

दया : करा रहे हैं।

दादी : और फायदा नहीं होता ?

दया : अभी तो नहीं···

दादी : और जब तक तुझ पे चंडाल चढ़ा है, होगा भी नहीं ! (दया चौंककर देखती है।) यह तन का नहीं, मन का रोग है। अपने धर्म से गिरकर जो पाप तूने उस लफंगे के साथ किया है···

दया : (काँपकर) दादी जी, भगवान के लिए चुप हो जाइये ! आपने जो चाहा, मैंने वही किया।

दादी : पर अब तो नहीं कर रही।

दया : मैं कर लूगी। मुझे बताइए, मैं क्या करूँ ?

दादी : अपना मन शुद्ध करेगी ?

दया : कर लूगी।

दादी : पजा-पाठ और व्रत रखेगी ?

दया : रख लूंगी।

दादी : एक-दो दिन के नहीं—इक्कीस दिन के ?

दया : रख लूगी।

दादी : तो अगले सोमवार से देवी का पाठ बिठा। इक्कीस दिन [illegible] व्रत रख।

से आवे खाँसी।

रामदयाल : (दया से) सुन लिया ? (फिर दादी से) उन सुसरे अस्पताल वालों को यह न जाने क्या भड़का आयी कि हर सातवें दिन आन धमके हैं कि इसे अस्पताल भेजो। काम बिलकुल न कराओ। दूध, दही और मक्खन खिलाओ।

दादी : अब के आएँ तो मरों को पकड़कर चौके में बिठाइयो कि रोटियाँ तुम सेंको।

डाक्टर : (तभी बाहर से आवाज़ आती है) रामदयाल जी !

रामदयाल : लो ! अबके वह पास वाला डाक्टर आन धमका, जिसकी लुगाई इसे अस्पताल ले गई थी।

दादी : यह क्यों आया ?

रामदयाल : आया होगा इसकी सिफारिस करने।

दादी : तो उसे आने दे। मैं भुगतूंगी।

दया : (काँपकर) दादी जी ! आप उनसे कुछ न कहियेगा।

रामदयाल : (भड़ककर) चुप रहेगी कि (हाथ उठाकर) झापड़ दूं ! दादी जी, तुम इस सुसरे को ठीक कर दो। आ जाओ, डाक्टर साहब !

[दया अन्दर चली जाती है। डाक्टर आता है। उसके हाथ में बैग है।]

डाक्टर : नमस्ते, रामदयाल जी ! नमस्ते, माता जी !

गावे है कि फेंके है—ठीक होके ही ना देवी।

दादी : अरे, अगर काया-नष्ट वैद्य-डाक्टरों से दूर हो जाया करे तो भगवान को कौन पूछे ? इससे कुछ धर्म-करम करा !

रामदयाल : अजी धर्म-करम ! इनके नाम पर तो इसे साँप सूँघ जावे है। अबके इसने कवड़िया इकादशी का व्रत भी न रखा।

दादी : क्यों री ?

दया : मेरा जी ठीक नहीं था।

रामदयाल : इसका जी ठीक कब रहे है, इससे पूछो !

दादी : खैर, अब तू फिकर न कर। मैंने इसे बता दिया है। अगले सोमवार से देवी का इक्कीस दिन का पाठ चलेगा। यह निर्जल व्रत रखेगी। तू रोज सुबह मुट्ठीभर बाजरा छत पर कबूतरों को डाल आया कर। जैसे-जैसे वे दाने चुगेंगे, इसका रोग तिल-तिल करके घटता जाएगा।

रामदयाल : और इलाज ?

दादी : सब बन्द ! ये मरे वैद्य राख चटावे हैं और डाक्टर सुइयें बींधे हैं। तू पाव भर खूबकला, छटांक मुनक्के, पाव मिश्री और मुट्ठी-भर मुलेठी ले आ। दूध के साथ खूबकला और मुनक्के दे। मिश्री और मुलेठी यह मुंह में डाले रहे। फिटकरी चटका के मैं भिजवा दूंगी। बस फिर देखियो कि कैसे टिके बुखार और कहाँ

दादी : न, तू ही कर सकता है। धनवन्तरी का पुत्तर जो ठहरा।

डाक्टर : (चमककर) माताजी !

दादी : (कड़ी पड़कर) हमारे मामले में दखल देने की ज़रूरत नहीं है। मरीज़ हमारा है।

डाक्टर : लेकिन इस तरह आप मरीज़ को मार देंगी।

दादी : तो तुझे क्या ?

डाक्टर : (चौंककर) आप…आप यह क्या कह रही हैं ?

दादी : जो तू सुन रहा है। तुझे कमीशन मिलता है ?

डाक्टर : मुझे ? मुझे क्या मिलता है यह मैं ही जानता हूँ।

दादी : फिर यहाँ क्यों आया ? किसने भेजा ?

डाक्टर : (क्रोध से) मैं क्यों आया ? मुझे किसने भेजा ? (तभी दया कोठरी के दरवाज़े में नज़र आती है। डाक्टर बताने का इरादा छोड़ देता है और गहरा साँस लेकर) काश मैं बता सकता ! (दया से) दया देवी ! ये लोग बे-रहम हैं। हो सके तो जिन्दा रहने की कोशिश कीजियेगा। जिन्दा रहना कभी-कभी अपने लिए नहीं, दूसरे के लिए ज़रूरी हो जाता है—समझे (तेज़ी से चला जाता है)।

रामदयाल : देखा आपने ?

दादी : काल और रोग की परछाईं जो हुए। पर मु… हमें बहकावे में न आना।

दादी : (कठोरता से, भृकुटी ताने) नमस्ते ! तुम किस लिए आये हो ?

डाक्टर : इनकी पत्नी है न…

दादी : यह मेरी पोती है।

डाक्टर : (खुश होकर) तब तो फिर मैं आप ही से बात करूंगा। आपको मालूम है उन्हें दिक़ हो गई है ?

दादी : फिर ?

डाक्टर : इसके लिए बाक़ायदा डाक्टरी इलाज ज़रूरी है। उनका एक फेफड़ा खराब हो गया है। कम से कम छः महीने तक गोलियाँ, इंजेक्शन, और टॉनिक…

दादी : (ज़ोर देकर) हमें इलाज नहीं कराना।

डाक्टर : जी !

दादी : हमें इलाज नहीं कराना !

डाक्टर : लेकिन बिना इलाज के…देखिये इस पर पैसे खर्च नहीं होंगे। दवा अस्पताल में मिलेगी। इंजेक्शन मेरा कम्पाउण्डर लगायेगा और टॉनिक मेरे पास फ्री आते हैं।

दादी : हमें न टॉनिक चाहिये, न दवा, न इंजेक्शन !

डाक्टर : जी !

दादी : इन्हें अपने पास रखो। हम अपना इलाज अपने आप करेंगे।

डाक्टर : टी० बी० का इलाज ?…

दूसरा दृश्य

[वही दृश्य। आसन और हवनकुण्ड आदि लिए पंडित जी बाहर से आते हैं।]

पंडित : रामदयाल जी !

रामदयाल : (अन्दर से आकर, नमस्कार करके) आप सब चीजें लगाओ। मैं कपड़े बदलकर आया।

पंडित : अच्छा, यजमान। (पंडित जी पूजा का सामान लगाते हैं। कुछ देर बाद रामदयाल दूसरा कुरता पहनकर आता है।) देवी नही आयी ?

रामदयाल : नहा रही हैं।

पंडित : अति उत्तम, अति उत्तम। दादीजी को कहलवा दिया था ?

रामदयाल : हाँ। वह और चाचीजी दोनों ही आएंगी।

पंडित : बड़ी ज्ञानी-ध्यानी धर्मात्मा हैं। आज ग्यारहवें दिन, पाठ की अर्घ्य-पूर्ति पर उनका आना आवश्यक ही है।

रामदयाल : पर उसकी हालत तो बिगड़ती जा रही है।

पंडित : नही-नही, रामदयाल जी ! देवी कल्याण करेंगी।

रामदयाल : मुझे तो दीखता नही। व्रत और पाठ से उल्टी

रामदयाल : अजी, मैं आऊँगा उनके मण्ने में ? अब के कोई साला आया तो धक्के देकर निकाल दूँगा। वैसे ही जहर का घूट पिये बैठा हूँ। साले मुझसे कहवें हैं—लुगाई के पास न जाना। उसे···

दादी : (घबराकर) अच्छा-अच्छा, अब मुझे रिक्शा तक छोड़ आ।

रामदयाल : (अपनी रौ से निकलकर, उनका थैला उठाकर) चलिये।

[दया आकर पैर छूती है।]

दादी : जीती रह ! अगले सोमवार से···

दया : (मंच पर नीचे की तरफ जाते हुए) हाँ ! *अगले सोमवार से।*

[रोशनी बुझ जाती है।]

[दया उठकर अन्दर चली जाती है। रामदयाल का चेहरा तन जाता है।]

याल : आइये।

दिनेश : रामदयाल जी, मैं आपसे अर्ज़ करने आया हूं कि आप यह सब बन्द करा दीजिये।

दयाल : क्या ?

दिनेश : यह पाठ ! इनके व्रत !

दयाल : क्यों ?

दिनेश : इनको दिक़ है। इनके लिए वह चीज़ ख़तरनाक है जो इनको थकाती है।

पंडित : आप देवी के व्रत के प्रति अनास्था प्रकट कर रहे हैं ?

दिनेश : क्योंकि अगर इन्होंने इसी तरह व्रत रखे, और पूजा में बैठीं तो इनकी जान के लाले पड़ जाएंगे।

पंडित : लो, रामदयालजी।

दिनेश : इनकी बातों में न आइये, रामदयालजी। दया-जी को सिर्फ़ दवा, गिज़ा और आराम की ज़रूरत है।

पंडित : (हँसी उड़ाते हुए) और इनसे अच्छी हो जाएंगी —बिना ग्रह टले ? बिना उसकी इच्छा हुए ?

दिनेश : हाँ। बिना यह सब कुछ हुए। रामदयालजी, आप अस्पताल वालों का इलाज कराइए।

रामदयाल : क्या ?

इसकी वजह और हो गई है ...

पंडित : इस के बाद शारीरिक दुर्बलता आ ही जाती है। पर आध्यात्मिक शक्ति तो अवश्य ही बढ़ी होती है।

रामदयाल (अपनी धुन में) दूर तो काफी की बड़ी बड़े है।

पंडित (हवन का सामान करते-करते) शरीर के विकार का निकलना लाभकारी होता है। देवी तैयार हो गई होंगी शायद।

रामदयाल : देखता हूँ।

[रामदयाल फिर कुछ अन्दर जाता है। पंडित पाठ शुरू करता है। कुछ देर बाद रामदयाल देवी को पकड़कर लाता है। देवी मुश्किल से चल पाती है।]

पंडित : देवी को यहाँ बिठाओ। यहाँ, इस आसन पर। ठीक। तो पाठ शुरू करें ?

रामदयाल : करो।

पंडित : तो देवी ! अपने मन को सब ओर से हटाकर, एकाग्र चित्त होकर, ध्यान करो उस देवी का जो हम सबकी माँ है; जो शत्रु, रोग और कष्ट का संहार करती है···हाँ, इसी प्रकार, प्रसन्न-चित्त, सूक्ष्म शरीर, ध्यान-मग्न। ओ३म् नमः···
(पाठ शुरू करना चाहता है कि दिनेश तेजी से अन्दर आता है।)

दिनेश : रामदयाल जी !

दिनेश : (चौंककर) क्या ?

रामदयाल : मैं डाक्टरों का इलाज नहीं कराऊँगा, नहीं कराऊँगा !

दिनेश : (सहम होते हुए) चाहे वह मर जाए ?

रामदयाल : हाँ, तुम्हें क्या ?

दिनेश मुझे है।

रामदयाल · क्या है ?

दिनेश : मैं उसे फना होने नहीं दूँगा।

रामदयाल (आपे से बाहर होकर) तू ? तू कौन है ? कैसे आया ? वह तेरी क्या लगती है ?

दिनेश : (भावनाओं के उफान से आंदोलित) मेरी ! बताऊँ कि वह क्या लगती है ?

दया (तभी दया कोठरी के दरवाज़े पर नज़र आती है। उसने एक हाथ से दरवाज़ा पकड़ा हुआ है। उसका शरीर काँप रहा है।) दिनेश, अगर तुम मेरी जान लेना नहीं चाहते तो निकल जाओ, निकल जाओ ! निकल जाओ।

[बोलते-बोलते बेदम दुखी हो जाती है। फिर चुप हो जाती है। दिनेश चुप खड़े देखता है। फिर तेजी से निकल जाता है। कुछ देर बैठी रहकर दरवाज़ा बंद कर लेती है। रामदयाल उसे देखता है। फिर चौंकता है।]

रामदयाल पंडितजी, सुन ! सुन ! इसका तो बेटा बन-कर बाहर आ गया।

दिनेश : मैं डाक्टरों को तो नौकरी ठीक कर दूँ।
पंडित : जीवन-मरण उसकी मुट्ठी में तो है !
दिनेश : जहाँ तक टी० बी० का सवाल है, उसके इलाज, उसकी कोशिश, उसके अलावा मरीज को मौत के मुंह से निकाल लाते हैं।
पंडित : मौत के मुंह से सिर्फ परमात्मा निकालता है।
दिनेश : वह, जिसने टी० बी० के कीड़े और कैंसर के सेल बनाए ? पेचिश का जहर और दिल की बीमारियों में मदद आने वाले क्लॉट बनाए ? रामदयालजी, इन्सान को बचाने वाला, उससे प्रेम करने वाला सिर्फ इन्सान है—इन्सान को जहर चुभता है, दवा बनाता है, आपरेशन करता है।
पंडित : (रामदयाल से) यह नास्तिक है !
दिनेश : हां, क्योंकि मैं भगवान के दोषों को इन्सान के सिर नहीं मढ़ता और इन्सान की खूबियों का ताज उठाकर भगवान के सिर पर नहीं रखता। रामदयालजी, अव्वल तो भगवान है नहीं, और अगर है तो हमारी तमाम मजबूरियों और बदनसीबियों का जिम्मेवार है। इसलिए उसके आसरे न रहिए।
रामदयाल : (बिगड़कर) तुम्हारे डाक्टरों के रहूँ ?
दिनेश : हाँ। वही दयाजी को बचा सकते हैं।
रामदयाल : (निर्णयात्मक स्वर) फिर मुझे नहीं बचाना।

दिनेश . (चौंककर) क्या ?

मदयाल : मैं डाक्टरों का इलाज नहीं कराऊँगा, नहीं कराऊँगा !

दिनेश : (संयम खोते हुए) चाहे वह मर जाए ?

मदयाल : हाँ, तुम्हें क्या ?

दिनेश . मुझे है।

मदयाल . क्या है ?

दिनेश : मैं उसे फना होने नहीं दूँगा।

मदयाल . (आपे से बाहर होकर) तू ? तू कौन है ? कैसे आया ? वह तेरी क्या लगती है ?

दिनेश : (भावनाओं के उबाल में आंदोलित) मेरी ! बताऊँ कि वह क्या लगती है ?

दया . . . दया कोठरी के दरवाजे पर नजर बाती

. दरवाजा पकड़ा

) दिनेश.

. .

[[illegible]]

पंडित : किसको बुलाऊँ ? कहाँ हैं [illegible] ?

रामदयाल : [illegible]

पंडित : कहाँ गए ?

रामदयाल : (हाँफते हुए) [illegible]

पंडित : ये अभी लाता। आप इसको अन्दर ले जाइए।

[पंडित भी जाता है। रामदयाल [illegible] अन्दर ले जाता है। अभी दादी और चाची आती हैं।]

दादी : (इधर-उधर देखकर) अरे, मुन्ना का [illegible] हुआ है, वे लोग कहाँ गए ? रामदयाल !

रामदयाल : (अन्दर से आकर) दादी जी ! [illegible] रहा। रमा को भूख की [illegible] हो गई।

चाची : (भयभीत) क्या ?

दादी : (कठोर) कहाँ है वह ?

चाची : (विस्मित) आपने किसी को बुलाया ?

रामदयाल : हाँ, पंडित डॉक्टर को बुलाने गया है।

[दादी रामदयाल की तरफ घूरते देखती है। वह नज़र झुका लेता है। चाची दादी का हाथ पकड़कर अन्दर जाती है। रामदयाल खड़ा रह जाता है। तभी पंडित डाक्टर को लेकर आता है।]

रामदयाल : डाक्टर साहब !

डाक्टर : (पूछते) मरीज कहाँ है ?

[रामदयाल हाथ से अन्दर इशारा करता है। डाक्टर

अन्दर जाता है। रामदयाल पीछे-पीछे जाता है पर जाते-जाते पंडित से कहता है।]

रामदयाल : पंडितजी ! आप यह सब उठाकर ले जाइये।

पंडित : ले जाता हूँ, यजमान ! ले जाता हूँ।

[पंडित जल्दी-जल्दी अपना सामान बटोरता है और फिर दरवाजे के पास रखे अपने जूते पहनकर चला जाता है। ज्यों ही वह जाता है अन्दर के दरवाजे से डाक्टर निकलता है। पीछे-पीछे सब लोग आते हैं।]

चाची : (विकल) हुआ क्या है, डाक्टर साहब ?

डाक्टर : जो इन्होंने चाहा। उसका फेफड़ा बिलकुल गल गया मालूम होता है।

चाची : फेफड़ा गल गया ?

डाक्टर : हाँ! अस्पताल वाले कब से आ रहे थे। मैं बताता रहा कि यह मर जाएगी पर एक न सुनी।

चाची : अब क्या होगा ?

डाक्टर : होगा क्या ! आपरेशन होगा।

रामदयाल : आपरेशन ?

डाक्टर : हाँ।

चाची : तो डाक्टर साहब, करवा दीजिए।

डाक्टर : इसके लिए अस्पताल में दाखिल कराना पड़ेगा।

चाची : तो करा दीजिए !

डाक्टर : (कटु व्यंग्य से) इनसे पूछ लीजिए !

दादी : (मुँह फेरकर) मुझसे क्या पूछना ? पहुँचा दो मुर्दे को गिद्धों के पास।

[डाक्टर गौर से उसकी तरफ देखता है।]

भाभी : डाक्टर साहब से कहो न, इसे दाखिल कर दें।

रामदयाल : (नर्स से मुखातिब) डाक्टर साहब, इसे दाखिल कर दो।

डाक्टर : इलाज नहीं कराना, आपरेशन कराने भेजते हो। लेकिन आपरेशन ऐसे नहीं होता।

रामदयाल : तो ?

डाक्टर : इसके लिए खून देना होगा।

रामदयाल : (डरकर) खून ?

डाक्टर : हाँ, आपरेशन के लिए खून चाहिए।

रामदयाल : लेकिन क्या अस्पताल से खून नहीं मिलता ?

डाक्टर : अस्पताल में खून बनता है ? बीवी को घुमा-घुमाकर तुम मारो, खून दूसरे दें !

रामदयाल : लेकिन मैं···(पीछे की तरफ जाते हुए) मैं कैसे दे सकता हूँ ! मैं तो खुद कमजोर हूँ। (दादी के पीछे जा खड़ा होता है।)

दादी : (आगे आकर) हाँ, यह कैसे दे सकता है ?और आदमी का खून लेकर औरत की क्या सात जन्म मुक्ति होगी ?

डाक्टर : मुक्ति का इतना खयाल है तो तुम दे दो।

दादी : (चौंककर पीछे हटती है) मैं ?

डाक्टर : हाँ, तुम तो इसकी दादी हो।

दादी : मैं···मैं क्यों होती······ऐसे रिश्ते मानने लगूँ तो सारे जगत् की दादी न बन जाऊँ !

ाक्टर : बहुत खूब ! जिस दिन पोता शादी करने चला था, उस दिन यह उसकी बहन थी, लेकिन आज तुम्हारी पोती ही नहीं !

दादी : (आगे बढ़ते हुए) तूने क्या कहा ?

चाची : (बीच में आकर) डाक्टर साहब, मेरा खून ले लो।

दादी : (झपटकर दाएँ करते हुए) क्या ? तू अपना खून देगी ! अरे, मेरे बेटे कमा-कमा के तुझे हथनी इसलिए बना रहे हैं कि तू खून बाँटती फिरे ? चल घर !

दयाल : (उधर से निराश होकर) डाक्टर साहब ! खून बिकता भी तो है ?

डाक्टर : बिकता है।

मदयाल : कितने का आएगा ?

डाक्टर : चार-पाँच सौ का।

मदयाल : (चौंककर) क्या ?

डाक्टर : चार-पाँच सौ का। दूसरों का खून पानी नहीं है, जो प्याऊ पर मुफ्त मिल जाएगा !

मदयाल : लेकिन मेरे पास तो इतने रुपये नहीं हैं। (दादी की तरफ देखकर) मैं पूछता हूँ।

डाक्टर : पूछ लो। मशवरा कर लो। अगर रगों में खून या जेब से टके निकाल सको तो खबर करा देना।

[डाक्टर तेज़ी से उन्हें घूरता चला जाता है।]

रामदयाल : (दादी जी की तरफ़ देखते हुए) दादी जी !

दादी : *(मुँह फेरकर) क्या है ?*

रामदयाल : अब क्या करूँ ?

दादी : मैं क्या बताऊँ ? मेरे पास क्या नौली रखी है जो तेरी या उस मुए की हथेली पर रख दूं ?

रामदयाल : तो उधार दिलवा दो।

दादी : *किससे ?—बेटों से ? उन पे होता तो एक परदेस में नौकरी करता ? और मैं तुमसे पूछूं हूँ तूने सासतर पढ़े हैं ?*

रामदयाल : सासतर ?

दादी : हाँ, सासतर। अगर लुगाई पर पराए मरद का परछावाँ पड़ जाए तो वह क्या हो जाती है ?

रामदयाल : पतिता।

दादी : और अगर बेटी के बदन में बाप के अलावा किसी और का ख़ून मिल जाए ?

रामदयाल : वेश्या पुत्री।

दादी : तो अक्ल के कोल्हू ! तू अपनी लुगाई के बदन में जाने किस-किस का ख़ून डलवा के उसे क्या बनाने जा रहा है ? *(देखता रह जाता है।)* अरे, उसकी जान तो सोख ली, अब उसका अगला जन्म तो ख़राब न कर।

रामदयाल : (हैरान) दादी जी !

दादी : धर्म की कह रही हूँ।

चाची : लेकिन बिना इलाज के

दादी : इलाज अस्पताल ही में होता है ? अगर इलाज कराना है तो मेरे पास आइयो। अपने वैद्य से दवा दिलवाऊंगी—अगर दो पुड़ियों मे खून बन्द न हो जाए तो मेरा नाम बदल दीजो। (जाते हुए) आएगा ?

रामदयाल : (गहरा सांस लेकर) आऊंगा, दादीजी। रास्ता नहीं है तो कहां जाऊंगा।

[दादी चाची का हाथ खींचकर ले जाती है। रामदयाल पूरी तरह थका बीच में पड़े मूढ़े पर बैठ जाता है।]

तीसरा अंक

[पहले अंक वाला दिनेश का कमरा। कमरा बिलकुल वैसा ही है। चाची अन्दर से कुछ किताबें लिए आती है और आकर किताबों को अलमारी में रखती है। तभी दिनेश आता है। चाची को किताबें रखते देखता है। फिर धीरे-धीरे आगे बढ़कर आवाज़ देता है।]

दिनेश : चाची जी !

चाची : (पलटकर, खुश होकर) तू आ गया !

दिनेश : हाँ, चाची। ज़िन्दगी में यह कसम भी आकर तोड़नी थी।

चाची : *तेरी कसम इतनी बड़ी है ?*

दिनेश : चाची जी, मर जाता पर अपने लिए इस घर में कभी न आता।

चाची : ऐसी बातें करेगा ?

दिनेश : सच कहता हूँ, चाची। इस घर में कदम रखने को जी नहीं चाहता। यह घर नहीं, मेरी आर्ज़ुओं की मज़ार है।

चाची : मैं जानती हूँ। पर आज सवाल तेरा नहीं, उसका है।

दिनेश : (चिन्तित होकर) *उसका···क्या हाल है ?*

चाची : उल्टियां आ रही हैं।

दिनेश : कोई फ़ायदा नहीं ?

चाची : अनाड़ी वैद्यों की पुड़ियों से खून रुका है? दिनेश, जब तक वह अस्पताल नहीं जाएगी, उसकी जान नहीं बचेगी।

दिनेश : लेकिन मैं किसको कैसे समझाऊँ ? आप रामदयाल से बात नहीं कर सकती ?

चाची : (उत्तेजित होकर) मैं ?

दिनेश : हाँ।

चाची : (तेज़ी से) दिनेश, मैं उसकी शक्ल तक देखना नहीं चाहती।

दिनेश : लेकिन दया की खातिर···

चाची : (उसकी तरफ देखकर, फिर ढीली पड़कर) मिल लूँगी। पर वह मानेगा नहीं।

[दिनेश चाची की ओर देखता है।]

चाची : उल्टा यहाँ आकर कह देगा।

दिनेश : तब कतई न जाइएगा।

चाची : इसीलिए मैं पंडित के पास गई थी।

दिनेश : पंडित के ?

चाची : हाँ। अगर उसकी खोपड़ी में कोई अक्ल की बात बिठा सकता है तो वह पंडित है।

दिनेश : उसने क्या कहा ?

चाची : वह तो मानता है। कहता है अस्पताल ले जाओ। पर दादी किसी पोते की सुने तब न !

दिनेश : तो वह किसी की भी कैसे सुनेंगी ?

चाची : दिनेश, वे अब आएँगे तो सब कुछ हो जाएगा। बस तू किसी तरह उन्हें मना ले।

दिनेश : मैं पूरी कोशिश करूँगा, चाची जी। आपने उन्हें आने के लिए कह दिया था ?

चाची : वे आते ही होंगे। डाक्टर साहब से मिला ?

दिनेश : हाँ, रात मिला था। पहले वे भी न मानते थे। पर जब मैंने बताया दादी जी बाहर गई हुई हैं, तब मान गए।

चाची : उनके आने से बहुत फ़र्क पड़ जाएगा। वे डाक्टरों की बहुत मानते हैं।

[तभी दरवाज़े में दिनेश के पिता नज़र आते हैं।]

चाची : (दबे स्वर में) वे आ गए।

[वह सिर पर पल्लू लेकर अन्दर चली जाती है। दिनेश दरवाज़े की तरफ़ बढ़ता है। पिता अन्दर आते हैं। वे पहले से थके और उदास दीखते हैं। एक बार दिनेश को देखकर नज़रें झुका लेते हैं।]

पिता : ठीक हो ?

दिनेश : जी हाँ। आप ठीक हैं ?

पिता : हाँ, ठीक ही हूँ। (पलंग पर बैठ जाता है। कुर्सी की तरफ इशारा करके) बैठ जाओ।

[दिनेश बैठ जाता है।]

पिता : कौशल्या ने बताया—तुम मुझसे कुछ चाहते हो ?

दिनेश : जी हाँ। (नज़रें झुकाकर) मेरा हक़ नहीं रहा,

फिर भी आपके पास आया हूँ।

पिता : मुझे क्या करना है ?

दिनेश : आपको मालूम है दया का फेफड़ा गल गया है। डाक्टरों ने आपरेशन बताया है।

पिता : (उठकर) मगर तुम्हारी दादी अपना इलाज कर रही हैं।

दिनेश : लेकिन उनकी पुड़ियों से तपेदिक नहीं रुकेगी। वे उसे मारकर रहेंगी।

पिता : मुझसे क्या चाहते हो ?

दिनेश : किसी तरह भी दया को अस्पताल भिजवा दीजिए।

पिता : अम्मा के न चाहने पर भी ?

दिनेश : आज चाहने न चाहने का सवाल नहीं, एक जान बचाने का सवाल है।

पिता : (बहुत अर्थपूर्ण ढंग से) कब नहीं था ?

दिनेश : (चौंककर) जी ?

पिता : पहले मैं क्या कर पाया ?

दिनेश : पहले आप अपने धर्म में बँधे थे। पर आज आपका बेटा आपसे अपने लिए कुछ नहीं माँग रहा। सिर्फ दूसरे के लिए···

पिता : (कड़वी मुसकराहट के साथ) जो अपने के लिए नहीं कर सका, वह दूसरे के लिए करेगा ?

दिनेश : लेकिन इन मानों में दया दूसरी नहीं है। उसके लिए आप जो कुछ करेंगे, मेरे लिए करेंगे। एक

दायी धर्म में बँधा हूँ। (संकल्प करके) पर मैं दया को भेजूँगा। दया अस्पताल जाएगी।

दिनेश : लेकिन जल्दी करना होगा। वक्त बहुत कम है।

पिता : तुम्हारी दादी जी कल आ रही हैं। मैं दया को परसों भिजवा दूँगा।

दिनेश : बहुत अच्छा।

पिता : और किसी चीज़ की जरूरत होगी ?

दिनेश : जी नहीं।

पिता : कुछ रुपया-पैसा···?

दिनेश : उसकी कोई जरूरत नहीं है।

पिता : ···खून देने की बात थी ?

दिनेश : वह मिल गया है।

पिता : किस से ?

दिनेश : एक के पास था।

पिता : मुफ्त ?

दिनेश : (भावना में बहकर) जी हाँ ! उसके पास फालतू था। अपने किसी काम का न था।

पिता : (चौंककर) क्या ?

दिनेश : (संयम करके) कुछ नहीं। बस आप जल्द से जल्द दया को अस्पताल भिजवा दीजिए।

पिता : आज रात रहोगे ?

दिनेश : (नज़रें झुकाकर, धीरे से) मैं जाऊँगा।

पिता : पर खाना तो खाओगे ?

दिनेश : खा लूँगा।

वार दादी जी की ज़िद तोड़ दीजिए।

पिता : तुम उनके यहाँ गये थे ?

दिनेश : (बौखलाकर) जी।

पिता : तुम दया के गए थे ?

दिनेश : (गर्दन झुकाकर) जी हाँ।

पिता : डाक्टर भी तुमने भेजा था ?

दिनेश : जी हाँ, वे मेरे एक दोस्त की बहन के पति हैं।

पिता : तभी तुम्हारी दादी ऐसे कर रही हैं।

दिनेश : (चौंककर, फिर सँभलकर) लेकिन उनको नफरत मुझसे हो सकती है, दया से तो नहीं ?

पिता : (उठकर दायीं ओर जाते हुए) मैं जानता हूँ। मगर काश वे मेरी सौतेली माँ न होतीं या उन्होंने मेरे साथ सौतेली माँ जैसा बरताव किया होता !

दिनेश : (उत्तेजना से) पर मेरे साथ तो कर लिया। पिताजी, मुझे अपनी माँ कभी याद न आयी। पर अब बार-बार मैंने महसूस किया है कि बच्चों से उनकी माँ नहीं छिननी चाहिए।

पिता : (विह्वल होकर) दिनेश !

दिनेश : पिताजी ! जब शाम होती है और मैं होता हूँ और कमरे में कोई यह कहने वाला भी नहीं होता कि मैंने बत्ती क्यों नहीं जलाई, तब मुझे अपनी माँ याद आती है।

पिता : ऐसे न कह, मेरे बच्चे, ऐसे न कह। मैं बड़े दुरा-

दायी धर्म में बँधा हूँ। (संकल्प करके) पर मैं दया को भेजूंगा। दया अस्पताल जाएगी।

दिनेश : लेकिन जल्दी करना होगा। वक्त बहुत कम है।

पिता : तुम्हारी दादी जी कल आ रही हैं। मैं दया को परसों भिजवा दूंगा।

दिनेश : बहुत अच्छा।

पिता : और किसी चीज की जरूरत होगी ?

दिनेश : जी नही।

पिता : कुछ रुपया-पैसा…?

दिनेश : उसकी कोई ज़रूरत नही है।

पिता : …खून देने की बात थी ?

दिनेश : वह मिल गया है।

पिता : किस से ?

दिनेश : एक के पास था।

पिता : मुफ्त ?

दिनेश : (भावना में बहकर) जी हाँ ! उसके पास फालतू था। अपने किसी काम का न था।

पिता : (चौंककर) क्या ?

दिनेश : (संयम करके) कुछ नहीं। बस आप जल्द से जल्द दया को अस्पताल भिजवा दीजिए।

पिता : आज रात रहोगे ?

दिनेश : (नजरें झुकाकर, धीरे से) मैं जाऊँगा।

पिता : पर खाना तो खाओगे ?

दिनेश : खा लूंगा।

रिमा (अन्दर जाने के लिए मुड़ते हुए) जी मैं अभी दवाइयाँ ले आऊँ। कुछ कौशल्या से कह देना।

दिनेश जी।

[रिमा अन्दर जाती है। कौशल्या नहीं आ पाती है।]

भाभी : क्या कह गए ?

दिनेश ताला बन्द गया है।

भाभी क्या ?

दिनेश कि भिजवा देंगे।

भाभी : फिर सब ठीक हो जाएगा। अब डाक्टर के घर जाना।

[अभी डाक्टर की आवाज आती है।]

डाक्टर दिनेश साहब !

दिनेश (दरवाजे की तरफ बढ़कर) डाक्टर साहब, आइए !

डाक्टर : (अन्दर आकर कौशल्या को नमस्ते करते हुए) माफ कीजिए, मुझे जरा देर हो गई। एक मरीज के यहाँ जाना पड़ गया।

भाभी : कोई बात नहीं। आपकी मेहरबानी से काम हो गया।

डाक्टर : (खुश होकर) इनके पिताजी मान गए ?

भाभी : जी हाँ। वे अभी-अभी कह गए हैं कि दवा को अस्पताल भिजवा देंगे

डाक्टर : और इनकी दादी जी ?

भाभी : वे उनकी मान जाएँगी

डाक्टर : कब लौट रही हैं ?

चाची : कल।

डाक्टर : (मुसकराते हुए) मैं तो नहीं आ रहा था। पर जब इन्होंने बताया कि वे यहां नहीं हैं···

चाची : बस संयोग ही समझिए कि उनको जाना पड़ गया। आप क्या पिएंगे ?

डाक्टर : जरूरी है ?

चाची : जी हां।

डाक्टर : तो ठंडा ले आइए।

[चाची जाती है।]

डाक्टर : खून का क्या होगा ?

दिनेश : उसकी आप फिक्र न कीजिए। खून मैं दूंगा।

डाक्टर : तुम ?

दिनेश : हां, डाक्टर। जिन्दगी जिसकी है, उसके किसी काम आ जाए, इससे खूबसूरत अन्जाम क्या हो सकता है ?

डाक्टर : कैसी नाउम्मीदी की बात करते हो !

दिनेश : उम्मीद कहां है, डाक्टर ?

डाक्टर : नहीं है ?

दिनेश : सिर्फ रात गुजारनी है।

डाक्टर : मि० दिनेश ! ज्यादा नहीं, सिर्फ इतना कहूंगा—जो बीत जाता है, रोशनी की रफ्तार से अन्तरिक्ष में चला जाता है।

दिनेश : लेकिन निशान तो रह जाता है।

डाक्टर . निशान मकबरे होते हैं। उनमें रहा नहीं जाता।

[तभी कौशल्या शरबत लेकर आती है और डाक्टर को देती है।]

डाक्टर . (गिलास लेकर) कौशल्या जी, इन्हें समझाइए—ये ज़िन्दगी को लाइलाज समझते हैं।

चाची : क्योंकि इसने खुद इलाज नहीं किया।

दिनेश : आप मुझे कसूरवार ठहराती हैं ?

[डाक्टर इस बीच शरबत पीता है।]

चाची : हाँ। यह रोग अगर पाला तो तूने पाला।

दिनेश : (चौंककर) मैंने ?

चाची : हाँ, तूने।

दिनेश : यानी मेरे लिए रास्ता था ?

चाची : हाँ। जिसका हाथ पकड़ा था, पकड़े रहता, चाहे वह लाख छुड़ाती।

[दिनेश डाक्टर की तरफ देखता है।]

डाक्टर : (मुसकराकर गिलास मेज़ पर रखते हुए) मि० दिनेश, डाक्टर हूँ इसलिए कहूँगा—जो ज़िन्दगी की जायज़ खुशी के रास्ते में आता है, उसके आगे हथियार डालना ज़िन्दगी के साथ ग़द्दारी है।

दिनेश : डाक्टर !

डाक्टर : (अपना बैग उठाकर हाथ मिलाते हुए) ज़िन्दा रहो। ज़िन्दगी का तकाज़ा ज़िन्दादिली से पूरा करो।

[हाथ मिलाकर, कौशल्या को नमस्ते करके डाक्टर

चला जाता है। डाक्टर के जाने के साथ ही सब रोश-
नियाँ बुझ जाती हैं। कुछ क्षण बाद जब प्रकाश होता है
तो पंडित और पिता अन्दर के दरवाज़े से कमरे में
प्रवेश करते हैं। पंडित के हाथ में पोटली है।]

पिता : पंडित जी ! आज जैसे मैं गंगा नहा गया। मेरे सिर से बहुत बड़ा बोझ हट गया।

पंडित : इसमें क्या सन्देह है, महाराज !

पिता : दया का इलाज हो गया, वह ठीक होकर अपने घर आ गई, अब मेरी आत्मा पर कोई भार नहीं है।

पंडित : मैं तो दादीजी को पहले ही समझाता था कि परमात्मा की अनुकम्पा के लिए भी उपचार या साधन चाहिए। उन्हें इसकी राह में नहीं आना चाहिए।

पिता : आपने बहुत कृपा की, पंडित जी ! आप सहायता और समर्थन न करते तो मैं अकेला अम्माजी को न मना पाता।

पंडित : यह तो हमारा धर्म था। जहाँ से दान लेते है, वहाँ के कल्याण की सोचना हमारा कर्तव्य है (कहते-कहते द्वार तक पहुँच जाता है)।

पिता : अच्छा। (हाथ जोड़कर) एक बार फिर आपका धन्यवाद। आप सन्तुष्ट तो हैं न ?

पंडित : (पोटली दिखाकर) अरे महाराज, आपने इतना दिया। ब्राह्मण की आत्मा से आपके लिए

आशीर्वाद ही निकलता है। अच्छा…

पिता : प्रणाम।

पंडित : सुखी रहो। (जाता है।)

पिता : (उसके जाने पर पलटकर) कौशल्या!

चाची : (अन्दर से आती है और तनिक मुँह एक ओर करके खड़ी हो जाती है) जी!

पिता : तुमने मेहरी से कह दिया है कि दया के यहाँ काम कर आया करे?

कौशल्या : जी हाँ।

पिता : और रोटी बनाने वाली?

कौशल्या : वह कल से जाएगी।

पिता : ठीक है। ख्याल रखना। और तब तक खाना बनाकर भिजवाती रहना।

कौशल्या : जी।

पिता : वैसे मैं रामदयाल से भी कहूँगा कि वह दया को यहीं भेज दे।

डाकिया : (बाहर से आवाज आती है।) चिट्ठी!

[पिता बाहर जाता है। चिट्ठी ले पढ़ता आता है सहसा चौंक उठता है और गौर से पढ़ता है।]

पिता : तूने इसकी हरकत देखी?

चाची : जी, किसकी?

पिता : दिनेश की। अब कानपुर जा रहा है।

चाची : कानपुर?

पिता : हाँ। काशीनाथ ने खबर दी है कि वह वहाँ

एक स्कूल मे नौकर हो गया है।

चाची : नौकर ! उन्हें कैसे पता ?

पिता : इण्टरव्यू में गया था। यकायक उन्हें मिल गया।

चाची : कब ?

पिता : पिछले हफ्ते।

चाची . पर यहाँ तो किसी को कुछ नही बताया ?

पिता : यहाँ उसका कौन है ? (खत कौशल्या को देकर, जाने के लिए मुड़ता है।)

चाची : खाना तो खाते जाइए।

पिता : अभी आता हूँ।

[पिता जाता है। कौशल्या खत पढ़ती है। खत पढ़कर गहरा साँस लेती है। फिर अन्दर जाने को मुड़ती है। दरवाजे पर दिनेश नजर आता है।]

दिनेश : (शोखी से) किसका खत पढ़ रही हो, चाची ?

चाची : (पलटकर) तुम्हारा !

दिनेश : मेरा ?

चाची : हाँ। (खत दिनेश को दे देती है।)

दिनेश : (खत पढ़कर खिसियानी हँसी हँसकर) ओह ! इसी को पढ़कर नाराज हैं ?

चाची : हाँ।

दिनेश : (बहुत गंभीर होकर) लेकिन आपको तो खुश होना चाहिए।

चाची : क्या ?

दिनेश : (बहुत गंभीर होकर) मेरा यहाँ से चला

[illegible] ही ठीक है।

चाची क्योंकि जिस शख्स के लिए [illegible] था
गुम हो गया!

दिनेश नहीं।

चाची ना?

दिनेश मैं [illegible] से [illegible] नहीं चाहता।

चाची [illegible] सकता है?

दिनेश [illegible] मेरे लिए [illegible] है।

चाची और अब [illegible] है?

दिनेश उसको देखा नहीं था, पहलो। अब आ सकता था।

चाची दिनेश!

दिनेश : (एक बार उसे देखकर) उसके इतने करीब आकर, उससे मिला रहा नहीं जायेगा।

चाची : (मायूस हो जाती है। फिर आखिरी कोशिश करती है।) किसी तरह नहीं रह सकते?

दिनेश : चाची! यदि तिश्नगी है तो समन्दर से नहीं रहा जाता। मैं कैसे रह पाऊँगा?
[एक लम्हे को खामोशी छा जाती है।]

चाची : और दया?

दिनेश : वह मुझे सलाम किया चुकी है। (खामोशी के कुछ क्षण)

चाची : उससे मिले बिना चला जाएगा?

दिनेश : हाँ।

चाची : इतना पत्थर-दिल हो गया है?

दिनेश : जब जाना ही है चाची तो मिलने का मोह कैसा !

चाची : (एक क्षण उसकी आँखों में देखकर) कब जाएगा ?

दिनेश : कल।

चाची : तो एक बात मानेगा ?

दिनेश : क्या ?

चाची : जब इतनी अक्लमन्दी की बात कर रहा है तो एक और करना।

दिनेश : क्या ?

चाची : शादी कर लेना।

दिनेश : (तड़प उठता है) चाची !

चाची : जब रात काटनी ही है तो अलाव न जलाने की ज़िद क्यों ?

दिनेश : अब मेरे लिए अलाव कभी नहीं जलेगा।

चाची : यह तेरी ज़िद है।

दिनेश : ज़िद नहीं है, चाची जी। मेरे सीने में जुल्म का जो खंजर गड़ा है, उसे वक्त का मज़बूत हाथ भी नहीं उखाड़ सकता। मेरे लिए सब कुछ ख़त्म हो गया है।

चाची : डाक्टर के कहने का भी कुछ असर नहीं हुआ ?

दिनेश : डाक्टर इलाज करते हैं, उन्होंने दर्द देखे हैं, सहे नहीं हैं।

चाची : पर दर्द की दवा भी तो होती है।

दिनेश : क्या ?

दया : वादा करो झूठ नहीं बोलोगे ?

दिनेश : तुम क्या पूछना चाहती हो ?

दया : जो सब जानते हैं, सिर्फ़ मैं नही जानती।

दिनेश : क्या ?

दया : मेरे आपरेशन के लिए खून किसने दिया ?

दिनेश : दया !

दया : (ज़ोर-ज़ोर से) बताओ मेरे आपरेशन के लिए खून किसने दिया ?

दिनेश : (झूठ की हिचकिचाहट के साथ) मैं नही जानता।

दया : जिसे सब जानते हैं उसे तुम नही जानते ?

दिनेश : (एक क्षण के लिए नज़र मिलाकर) कौन जानता है ?

दया : डाक्टर, प्रभा, चाची जी, ताऊ जी।

दिनेश : मुझे नहीं मालूम।

दया : सच कहते हो ?

दिनेश : हाँ।

दया : तुम्हारी दया मर जाये…।

दिनेश : दया। (हाथ उसके मुह के करीब लाकर गिरा लेता है)।

दया : तो बोलो, खून किसने दिया? मैंने किसका खून लिया है ?

दिनेश : मेरा।

दिनेश : मेरे दर्द की दवा नहीं है चाची, क्योंकि जो दवा थी वह खुद दर्द बन गई है।

[पलंग पर बैठकर चेहरे को हाथों से ढँक लेता है।]

चाची : (एक क्षण उसकी तरफ़ देखती है। फिर उदासी के इस बोझिल वातावरण को दूर करने के लिए दिनेश को अकेला छोड़ने का निर्णय करती है।) अच्छा, मैं तेरे लिए चाय बनाकर लाती हूँ। जाना नहीं।

[चाची बिना नजरें मिलाए चली जाती है। दिनेश उसी तरह कुछ देर तक दर्द की तसवीर बना रहता है। सहसा दरवाज़े पर दया नज़र आती है। आहट-सी पाकर दिनेश चौंक उठता है और दरवाज़े की तरफ़ देखता है। दया को देखते ही वह उठ खड़ा होता है।]

दिनेश : (चौंककर) दया, दया! तुम कैसे चली आयीं? तुम्हारा तो अभी आपरेशन हुआ है!

दया : (कमज़ोर, पर पूरी तरह संयमित स्वर में) मैं ठीक हूँ।

दिनेश : (घबराकर) तुम यहाँ बैठो। (कुर्सी पर लाकर बिठाता है) तुम कैसे चली आयीं?

दया : मैं तुम्हारे कमरे पर होकर आ रही हूँ।

दिनेश : मेरे?

दया : हाँ।

दिनेश : मगर क्यों?

दया : मुझे तुमसे कुछ पूछना है।

दिनेश : क्या ?

दया : वादा करो झूठ नहीं बोलोगे ?

दिनेश : तुम क्या पूछना चाहती हो ?

दया : जो सब जानते हैं, सिर्फ़ मैं नहीं जानती।

दिनेश : क्या ?

दया : मेरे आपरेशन के लिए खून किसने दिया ?

दिनेश : दया !

दया : (ज़ोर-ज़ोर से) बताओ मेरे आपरेशन के लिए खून किसने दिया ?

दिनेश : (झूठ की हिचकिचाहट के साथ) मैं नहीं जानता।

दया : जिसे सब जानते हैं उसे तुम नहीं जानते ?

दिनेश : (एक क्षण के लिए नज़र मिलाकर) कौन जानता है ?

दया : डाक्टर, प्रभा, चाची जी, ताऊ जी।

दिनेश : मुझे नहीं मालूम।

दया : सच कहते हो ?

दिनेश : हाँ।

दया : तुम्हारी दया मर जाये··· !

दिनेश : दया ! (हाथ उसके मुह के करीब लाकर गिरा लेता है)।

दया : तो बोलो, खून किसने दिया ? मैंने किसका खून लिया है ?

दिनेश : मेरा।

[illegible]

दया : [illegible] ने) और किसी ने नहीं दिया !

([illegible] देखकर और दया की तरफ देखकर रह जाता है।)

दया : [illegible] दे ?

[illegible] : [illegible] नहीं है, दया !

दया : [illegible] तुमने [illegible] क्यों नहीं दिया ?

[illegible] : ([illegible] स्वर) उसके पास बेकार नहीं था।

दया : तुम्हारे पास था ?

[illegible] : हाँ।

दया : (स्वर टूट जाता है) क्या ?

[illegible] : मेरे पास [illegible], सब बेकार हैं।

[illegible] नहीं [illegible] मर जाता।

दया : तो मुझे क्यों [illegible] ? तुम्हारे लिए जिन्दगी का जवाब मौत था तो मुझे जवाब के बजाय सवाल क्यों दे दिया ?

[illegible] : मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकता था।

दया : तो फिर उस दिन मुझे अपने से जुदा क्यों होने दिया ? क्यों नहीं रोक लिया जब मैं अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारने चली थी ? बोलो, मुझे क्यों नहीं रोका ?

[illegible] : [illegible] सब कुछ कर लेता, दया, अगर

[illegible] : [illegible] हमने एहसान और नमक की

को फाड़कर उस खून को वहीं का वहीं बहा देते, जिसमें उनका नमक और एहसान घुला था। मुझे उसी लमहे यूं आज़ाद कर देते जैसे आज किया है।

दिनेश : (चौंककर देखता है) आज ?

दया : हाँ, जैसे आज ! आज मैं आज़ाद हूँ। उनका जो कुछ मुझमें था, मैंने खून के साथ थूक दिया है। आज अगर मुझमें किसी का कुछ है, तो तुम्हारा है।

दिनेश : (चौंककर) दया !

दया : हाँ, दिनेश। आज पहली बार मैं अपनी हूँ। बे-झिझक उसकी हो सकती हूँ जिसकी थी।

दिनेश : (बहुत ज्यादा चौंककर) दया !

दया : दिनेश, आज तुम मुझसे वह शब्द जो तुमने उस दिन कहा था। आज मैं सुन सकती हूँ। मैं सुनूंगी।

दिनेश : दया !

दया : मुझसे कहो, मेरे दिनेश। अपनी चीज़ को, अपने लिए मांग लो।

दिनेश : (एक नये, क्रान्तिकारी निश्चय की गंभीरता चेहरे पर आ जाती है।) इनकार तो नहीं होगा ?

दया : (आँखें फाड़कर) नहीं।

दिनेश : (कम्पित स्वर में) तो मेरी बन जाओ, दया।

दया : (उसकी बाँहों में आकर) मैं तुम्हारी हूँ। मैं

तुम्हारी हूँ।

श : ओह, दया ! (अपनी बाँहों में भींच लेता है)

[दो-तीन क्षण बाद दरवाज़े में दिनेश के पिता नज़र आते हैं। दोनों को इस स्थिति में देखकर नज़रें झुका लेते हैं और बहुत होले से बोलते हैं।]

ता : दिनेश !

[दया और दिनेश अलग हो जाते हैं।]

ता : दया बेटी ! (हाथ मे थैला दिखाकर) जरा *यह चीज़ें अन्दर अपनी चाची को दे आना* (चीज़ें दया को दे देते हैं)।

श : (पिता का उद्देश्य समझकर) दया ! तुम अभी *अन्दर नहीं जाओगी। पिताजी, मैं दया को अपने* पास रखूँगा। वह मेरे साथ कानपुर जाएगी।

ता : यह मैं देख रहा हूँ !

नेश : *अब तुम चीज़ें अंदर ले जा सकती हो। मगर* रखकर फौरन लौट आओगी। (दया अंदर चली जाती है)।

नेश : आपको उस सिलसिले में कुछ कहना है ?

पता : मैंने किस से कब कुछ कहा है !

नेश : लेकिन न कहकर भी आपने बहुत कुछ कहा है।

पता : तुम सुनोगे ?

दनेश : हाँ।

पिता : तुम यह गलत कर रहे हो।

दिनेश : क्योंकि दया की शादी एक बार हो चुकी है ?

/ पिता : और रामदयाल अभी जिन्दा है।

/दिनेश : मैं भी जिन्दा था ! (पिता चौंककर देखते
जब दया की शादी रामदयाल से की गई
तब मैं भी जिन्दा था !

पिता : लेकिन दया तब तुम्हारी नहीं थी।

/दिनेश : वह मेरी थी।

पिता : लेकिन दया ने अपना फैसला बदल दिया थ

/ दिनेश : दया आज फिर फैसला बदल रही है।

पिता : क्या ?

दिनेश : मैं दया को बुलाऊँ ?

पिता : अब कोई फायदा नहीं। ये बीती बातें हैं।

दिनेश : बातें सिर्फ मौत के बाद बीतती हैं। जब
आदमी जीता है, कुछ नहीं बीतता।

पिता : मैं बहस नहीं करूँगा। लेकिन इतना
कहूँगा, अपना हक छोड़कर, दूसरे को सौं
फिर उससे वापिस लेना, ठीक नहीं है
सूरत नहीं है।

दिनेश : मौत खूबसूरत है?

पिता : क्या ?

दिनेश : आपने दया को देखा था ! वह सुन चुकी
थी। मौत की बाँहों में चली गई थी। क्य
ठीक था ? खूबसूरत था ?

पिता : हारी-बीमारी सबको लगी रहती हैं।

दिनेश : दया को महज तन का रोग था ?

साहब। मुझ एक-दूसरे को नाम सपरिवार और सूरज और एक लड़की हुई [illegible] निकाल ले गये हैं। पर खूब है, श्रीमान के आगे उन्होंने रिश्ते की इस मोड़ को स्वीकार किया, जिसने उस समय में कोप रखा था।

पिता : तुम इस बात पर राजी हो कि उसने तुम्हें कुछ नहीं दिया ?

कमला : हाँ इस इसी बात के लिए उनकी एहसानमन्द हूँ कि उन्होंने मेरे जिस्म में भूख की तरह धुँआ न भरी जो मुझे एक बार फिर हकदार और मुलाजिमी के सामूह से न झूमती !

पिता : लेकिन फिर भी वह तुम्हारा पति है।

कमला : शराब आदमी के लिए औरों जगह पर भार भी भारी हो जाते हैं, पिता जी !

पिता : क्या !

कमला : अब झूठ का, अनिच्छा का, अपने और दूसरे के आदर का फिर और नहीं निभेगी, पिताजी ! जो मेरा है, उसके साथ रहूँगी।

क्या !

यह मेरा आखिरी फैसला है।

[illegible] ?

[illegible] मुझे जगह भारी कर दीजिएगा। (पिता [illegible] देखता है) उन्हें फर्क नहीं पड़ेगा।

[illegible] ते हैं ?

पिता : (कुछ देर दिनेश की आँखों में देखकर
[दिनेश दया की तरफ़ देखता है। वह
कदम उठाता है। दया पिता के पास जाती
कर उनके पाँव छूती है।]

पिता : (सिर पर हाथ रख) आज तुम्हारा हक़
करूँगा। लेकिन जिस दिन रामदयाल
करा दूँगा, तुम्हें अपना आशीर्वाद भेज
[दिनेश झुककर पिता के पाँव छूता है।
सिर पर हाथ रखकर तेज़ी से अन्दर की तरफ
लिए मुड़ता है।]

दिनेश : ज़रा चाची जी को भेज दीजियेगा।
[पिता एक नज़र देखता है, फिर अन्दर च
है। दिनेश और दया एक-दूसरे को देखते हैं।

दया : तुम्हें अफ़सोस तो नहीं होगा ?

दिनेश : (बहुत गंभीरता से) होगा !

दया : (चौंककर उसकी तरफ देखती है) त
सोस होगा ?

दिनेश : हाँ ! इस बात का कि
दिया था !
दिनेश !
[दया का सारा तनाव ख
और आत्मसमर्पण के साथ
है।